CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2023 with Solution PDF-Set 2/2/3

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक:** 80

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 13 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 2 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. राष्ट्रपिता, महात्मा गांधी सार्वजनिक और निजी स्वच्छता के प्रति चिंतित थे। दक्षिण अफ्रीका में बिताए दिनों के बाद से ही यह उनके सत्याग्रह अभियान का हिस्सा था। गांधी जी के लिए, समाज में स्वच्छता के लिए अभियान एक जाति विहीन और स्वस्थ समाज बनाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग था। उन्होंने स्वच्छता को व्यक्तिगत जिम्मेदारी बनाने और इसे अस्पृश्यता को दूर करने की कुंजी मानने के अपने विचार को दोहराते हुए कहा था, "हर कोई अपना स्वयं का सफाई कर्ता है।" गांधी जी जब दक्षिण अफ्रीका में थे तभी से उन्होंने अपनी साफ-सफाई का काम स्वयं करना शुरू कर दिया था और भारतीयों को भी सलाह दी थी कि वे अपना शौचालय साफ और सूखा रखें। वे जब भारत लौटे, तो उन्होंने दृढ़ता से भारतीयों के लिए स्वच्छता और उन्हें स्वच्छता के प्रति शिक्षित करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

गांधी जी ने कहा था, "स्वच्छता स्वतंत्रता से अधिक महत्त्वपूर्ण है।" हमारे माननीय प्रधानमंत्री ने स्वच्छता पर गांधी जी के विचारों से प्रेरणा ली और उनकी जयंती पर 'स्वच्छ भारत अभियान' शुरू किया। यह अभियान एक राष्ट्रीय प्राथमिकता बन गया और प्रधानमंत्री ने प्रत्येक भारतीय से इसमें शामिल होने और अपने आस-पास सफाई रखने का आग्रह किया।

इस राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान देने और स्वच्छता की बढ़ती चुनौतियों को दूर करने के लिए, स्वास्थ्य और परिवार-कल्याण मंत्रालय ने एक बहु-आयामी कार्यनीति अपनाई और स्वच्छता तथा स्वास्थ्य में सुधार के लिए कई पहल कीं। 2015 के बाद से इसने विशेष रूप से स्वच्छता को अपने नागरिकों के स्वास्थ्य और कल्याण में सुधार लाने के अपने प्रयासों का केन्द्र बिंदु बनाया है। ये पहल अपने कार्यक्रमों के माध्यम से स्वास्थ्य संस्थानों और लोगों में स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता पैदा करती है और अन्य मंत्रालयों के साथ मिलकर इसे समग्रता से कार्यान्वित करती है।

स्वास्थ्य और परिवार-कल्याण मंत्रालय की कायाकल्प पहल में सभी राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों में केन्द्र सरकार के संस्थानों और सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थानों में बुनियादी ढाँचे में सुधार, स्वच्छता व स्वास्थ्यकारिता और संक्रमण-नियंत्रण कार्यों में सुधार लाने के उद्देश्य से शुरू की गई थी। स्वास्थ्य सुविधाओं का मूल्यांकन कई मानदंडों के आधार पर किया जाता है, और हर साल प्रत्येक स्तर पर अधिकतम अंक पाने वाले संस्थानों को कायाकल्प पुरस्कार प्रदान कर मान्यता दी जाती है। [10 अंक]

1(i). महात्मा गांधी की प्रमुख चिंता थी – [1 अंक]

(A) स्वच्छता

(B) सत्याग्रह

(C) जाति-पाँति

(D) छुआछूत

सही उत्तर: (A) स्वच्छता

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में दिया गया कथ्य और उसका संदर्भ है।
- सही विकल्प चुनते समय मुख्य उद्देश्य, सहायक तथ्य और सामान्य परिणाम में अंतर करना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश के संकेत की पहचान गद्यांश का आरंभ गांधी जी की सार्वजनिक और निजी स्वच्छता संबंधी चिंता से होता है। आगे उनका स्वयं सफाई करना तथा भारतीयों को स्वच्छता की शिक्षा देना इसी मुख्य विचार को पुष्ट करता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (B) सत्याग्रह वह अभियान है जिसका स्वच्छता हिस्सा थी। (C) जाति-पाँति और (D) छुआछूत को दूर करना स्वच्छता अभियान से जुड़ा सामाजिक उद्देश्य है; ये आरंभ में बताई गई प्रमुख चिंता का स्थान नहीं लेते।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (A) है – स्वच्छता।

त्वरित सुझाव: गांधी जी की प्रमुख चिंता पूछे जाने पर आरंभिक वाक्य देखिए; उसी में सार्वजनिक और निजी स्वच्छता का सीधा उल्लेख है।

1(ii). प्रधानमंत्री द्वारा 'स्वच्छ भारत अभियान' की शुरुआत कब की गई ? [1 अंक]

(A) स्वतंत्रता दिवस से

(B) गणतंत्र दिवस से

(C) गांधी जयन्ती से

(D) सद्भावना दिवस से

सही उत्तर: (C) गांधी जयन्ती से

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में दिया गया कथ्य और उसका संदर्भ है।
- सही विकल्प चुनते समय मुख्य उद्देश्य, सहायक तथ्य और सामान्य परिणाम में अंतर करना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश के संकेत की पहचान दूसरे अनुच्छेद में स्पष्ट है कि प्रधानमंत्री ने गांधी जी के विचारों से प्रेरणा लेकर उनकी जयंती पर स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया। प्रश्न में अभियान आरंभ करने का अवसर पूछा गया है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) स्वतंत्रता दिवस, (B) गणतंत्र दिवस और (D) सद्भावना दिवस का अभियान की शुरुआत के अवसर के रूप में उल्लेख नहीं है। स्वतंत्रता शब्द गांधी जी के कथन में आता है, पर उससे स्वतंत्रता दिवस उत्तर नहीं बन जाता।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) है – गांधी जयन्ती से।

त्वरित सुझाव: अभियान की शुरुआत का अवसर खोजने के लिए उनकी जयंती वाले शब्द पहचानिए और उन्हें गांधी जयंती से जोड़िए।

1(iii). 'अस्पृश्यता' से आप क्या समझते हैं ? [1 अंक]

(A) जातीय भेदभाव

(B) वर्गीय भेदभाव

(C) आर्थिक भेदभाव

(D) सामाजिक भेदभाव

सही उत्तर: (A) जातीय भेदभाव

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में दिया गया कथ्य और उसका संदर्भ है।
- सही विकल्प चुनते समय मुख्य उद्देश्य, सहायक तथ्य और सामान्य परिणाम में अंतर करना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश के संकेत की पहचान अस्पृश्यता का अर्थ छुआछूत है, जिसमें जाति के आधार पर किसी व्यक्ति को अछूत मानकर उससे दूरी रखी जाती है। गद्यांश स्वच्छता अभियान को जातिविहीन समाज बनाने की प्रक्रिया से जोड़ता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (B) वर्गीय और (C) आर्थिक भेदभाव क्रमशः वर्ग तथा धन की स्थिति पर आधारित हैं। (D) सामाजिक भेदभाव व्यापक श्रेणी है; संदर्भ में जातिविहीन समाज और छुआछूत का संकेत होने से (A) अधिक विशिष्ट तथा उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (A) है – जातीय भेदभाव।

त्वरित सुझाव: अस्पृश्यता को छुआछूत से जोड़िए और फिर जातिविहीन समाज वाले संकेत से उसका विशिष्ट जातीय आधार पहचानिए।

1(iv). भारतीयों को स्वच्छता के प्रति शिक्षित करने की आवश्यकता क्यों पड़ी ? [1 अंक]

(A) स्वच्छता को लेकर सामाजिक भेदभाव के कारण

(B) भारतीयों द्वारा स्वच्छता के कार्य को हेय मानने के कारण

(C) स्वच्छता स्वयं का कार्य नहीं मानने के कारण

(D) स्वच्छता के महत्त्व को नहीं समझने के कारण

सही उत्तर: (D) स्वच्छता के महत्त्व को नहीं समझने के कारण

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में दिया गया कथ्य और उसका संदर्भ है।
- सही विकल्प चुनते समय मुख्य उद्देश्य, सहायक तथ्य और सामान्य परिणाम में अंतर करना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश के संकेत की पहचान गांधी जी ने भारतीयों के लिए स्वच्छता और उसके प्रति शिक्षा की आवश्यकता बताई। स्वच्छता को स्वतंत्रता से भी अधिक महत्त्व देने तथा व्यक्तिगत जिम्मेदारी बनाने की बात उसके महत्त्व को समझाने पर बल देती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) सामाजिक भेदभाव दूर करना अभियान का उद्देश्य है। (B) सफाई को हेय मानना और (C) उसे अपना कार्य न मानना सीमित प्रवृत्तियाँ हो सकती हैं, पर शिक्षा की व्यापक आवश्यकता स्वच्छता के महत्त्व को समझाने के लिए है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (D) है – स्वच्छता के महत्त्व को नहीं समझने के कारण।

त्वरित सुझाव: शिक्षित करने की आवश्यकता को स्वच्छता का महत्त्व समझाने से जोड़िए; किसी एक सामाजिक प्रवृत्ति तक उत्तर सीमित न कीजिए।

1(ix). स्वास्थ्य और स्वच्छता संबंधी जागरूकता की आवश्यकता क्यों है ? [1 अंक]

(A) बीमारियों से बचने के लिए

(B) जनता को जागरूक करने के लिए

(C) स्वस्थ समाज बनाने के लिए

(D) देश के विकास के लिए

सही उत्तर: (C) स्वस्थ समाज बनाने के लिए

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में दिया गया कथ्य और उसका संदर्भ है।
- सही विकल्प चुनते समय मुख्य उद्देश्य, सहायक तथ्य और सामान्य परिणाम में अंतर करना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश के संकेत की पहचान गद्यांश स्वच्छता अभियान को जातिविहीन और स्वस्थ समाज बनाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग कहता है। मंत्रालय की पहल भी नागरिकों के स्वास्थ्य और कल्याण में सुधार के लिए स्वच्छता तथा स्वास्थ्य की जागरूकता बढ़ाती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) बीमारियों से बचना इसका एक लाभ है, पर स्वस्थ समाज व्यापक उद्देश्य है। (B) जनता को जागरूक करना प्रश्न की बात को ही दोहराता है। (D) देश का विकास सामान्य दूरगामी परिणाम है; गद्यांश में स्वास्थ्य का उद्देश्य अधिक स्पष्ट है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) है – स्वस्थ समाज बनाने के लिए।

त्वरित सुझाव: स्वस्थ समाज बनाने के व्यापक लक्ष्य को पहचानिए; बीमारियों से बचना उसी लक्ष्य का एक सीमित लाभ है।

1(v). 'स्वच्छता स्वतंत्रता से अधिक महत्त्वपूर्ण है' – कथन का आशय है – [1 अंक]

(A) स्वच्छता स्वतंत्रता का आधार

(B) स्वस्थ नागरिक से स्वतंत्रता

(C) स्वच्छता सबसे आवश्यक

(D) स्वच्छता से स्वास्थ्य

सही उत्तर: (C) स्वच्छता सबसे आवश्यक

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में दिया गया कथ्य और उसका संदर्भ है।
- सही विकल्प चुनते समय मुख्य उद्देश्य, सहायक तथ्य और सामान्य परिणाम में अंतर करना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश के संकेत की पहचान स्वच्छता को स्वतंत्रता से अधिक महत्त्वपूर्ण कहना उसके अत्यधिक महत्त्व और प्राथमिकता पर जोर देना है। गांधी जी लोगों को समझाना चाहते हैं कि व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक जीवन में सफाई को अनिवार्य आवश्यकता माना जाए।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) स्वच्छता को स्वतंत्रता का आधार और (B) स्वस्थ नागरिक को स्वतंत्रता का साधन बताने का संबंध कथन में नहीं दिया गया। (D) स्वच्छता से स्वास्थ्य लाभ होता है, पर वह कथन की तुलना और प्राथमिकता का पूरा आशय नहीं बताता।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) है – स्वच्छता सबसे आवश्यक।

त्वरित सुझाव: अधिक महत्त्वपूर्ण को प्राथमिकता और अनिवार्यता के अर्थ में पढ़िए; कथन में स्वतंत्रता का कारण नहीं पूछा गया है।

1(vi). स्वास्थ्य और परिवार-कल्याण मंत्रालय का संबंध है – [1 अंक]

(A) छोटे बच्चों के स्वास्थ्य से

(B) स्वच्छता एवं स्वास्थ्य से

(C) भारत सरकार की योजनाओं से

(D) अस्पताल तथा कर्मचारियों से

सही उत्तर: (B) स्वच्छता एवं स्वास्थ्य से

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में दिया गया कथ्य और उसका संदर्भ है।
- सही विकल्प चुनते समय मुख्य उद्देश्य, सहायक तथ्य और सामान्य परिणाम में अंतर करना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश के संकेत की पहचान तीसरा अनुच्छेद बताता है कि स्वास्थ्य और परिवार-कल्याण मंत्रालय ने स्वच्छता तथा स्वास्थ्य में सुधार के लिए अनेक पहल कीं। नागरिकों के स्वास्थ्य और कल्याण के प्रयासों का केंद्र भी स्वच्छता बनाया गया है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) छोटे बच्चों का स्वास्थ्य मंत्रालय के व्यापक कार्यक्षेत्र को सीमित कर देता है। (C) सरकारी योजनाएँ बहुत सामान्य उत्तर है। (D) अस्पताल और कर्मचारी संस्थागत पक्ष हैं; गद्यांश में लोगों और संस्थानों दोनों की स्वच्छता तथा स्वास्थ्य पर जोर है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (B) है – स्वच्छता एवं स्वास्थ्य से।

त्वरित सुझाव: तीसरे अनुच्छेद में मंत्रालय की पहल के दोनों लक्ष्य एक साथ पहचानिए: स्वच्छता और स्वास्थ्य में सुधार।

1(vii). किसी भी देश में योजना बनाने का उद्देश्य होता है – [1 अंक]

(A) अधिकाधिक धन कमाना।

(B) संबंधित व्यक्तियों को लाभ पहुँचाना।

(C) देश के नागरिकों तक सुविधा पहुँचाना।

(D) लोगों को योजना के बारे में बताना।

सही उत्तर: (C) देश के नागरिकों तक सुविधा पहुँचाना।

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में दिया गया कथ्य और उसका संदर्भ है।
- सही विकल्प चुनते समय मुख्य उद्देश्य, सहायक तथ्य और सामान्य परिणाम में अंतर करना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश के संकेत की पहचान गद्यांश में मंत्रालय की योजनाएँ नागरिकों के स्वास्थ्य और कल्याण में सुधार तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थानों की सुविधाएँ बेहतर बनाने के लिए हैं। इससे योजना का व्यापक जनहितकारी उद्देश्य स्पष्ट होता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) अधिकाधिक धन कमाना इन पहलों का लक्ष्य नहीं है। (B) संबंधित व्यक्तियों का लाभ अपेक्षाकृत सीमित है। (D) योजना की जानकारी देना जागरूकता का उपाय हो सकता है; अंतिम उद्देश्य नागरिकों तक सुविधाएँ पहुँचाना है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) है – देश के नागरिकों तक सुविधा पहुँचाना।

त्वरित सुझाव: योजना के अंतिम जनहितकारी उद्देश्य को प्रचार के साधन से अलग कीजिए; नागरिकों तक सुविधा पहुँचाना परिणाम है।

1(viii). 'कायाकल्प पहल' योजना के अंतर्गत आने वाले कार्यक्रमों में इनमें से क्या सम्मिलित नहीं है ? [1 अंक]

(A) संक्रमण नियंत्रण कार्यक्रम

(B) स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रम

(C) स्वच्छता संबंधी कार्यक्रम

(D) शिक्षा संबंधी कार्यक्रम

सही उत्तर: (D) शिक्षा संबंधी कार्यक्रम

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार गद्यांश में दिया गया कथ्य और उसका संदर्भ है।
- सही विकल्प चुनते समय मुख्य उद्देश्य, सहायक तथ्य और सामान्य परिणाम में अंतर करना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश के संकेत की पहचान अंतिम अनुच्छेद में कायाकल्प पहल के अंतर्गत बुनियादी ढाँचे में सुधार, स्वच्छता, स्वास्थ्यकारिता और संक्रमण नियंत्रण का उल्लेख है। प्रश्न उस विकल्प को पहचानने का है जो इस विशिष्ट सूची में शामिल नहीं है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) संक्रमण नियंत्रण स्पष्ट रूप से शामिल है। (B) स्वास्थ्य संबंधी और (C) स्वच्छता संबंधी कार्यक्रम भी पहल के घोषित उद्देश्यों से मेल खाते हैं। सामान्य जागरूकता का उल्लेख अलग संदर्भ में है; यहाँ शिक्षा संबंधी कार्यक्रम सूचीबद्ध नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (D) है – शिक्षा संबंधी कार्यक्रम।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के नहीं शब्द को रेखांकित कीजिए और अंतिम अनुच्छेद की कायाकल्प सूची से चारों कार्यक्रम मिलाइए।

1(x). स्वच्छता को आप किस प्रकार की जिम्मेदारी मानते हैं ? [1 अंक]

(A) सामूहिक

(B) पारिवारिक

(C) सामाजिक

(D) व्यक्तिगत

सही उत्तर: (D) व्यक्तिगत

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के स्पष्ट कथन से व्यक्तिगत जिम्मेदारी पहचानना।
- उत्तर का चयन केवल दिए गए पाठ के प्रमाण और संदर्भ के आधार पर करना।

चरण 1: गद्यांश में गांधी जी के विचार को देखें गद्यांश में स्वच्छता को व्यक्तिगत जिम्मेदारी बनाने पर बल दिया गया है। गांधी जी का कथन है कि हर कोई अपना स्वयं का सफाई कर्ता है। अर्थात प्रत्येक व्यक्ति अपनी सफाई स्वयं करे और उसका दायित्व केवल किसी दूसरे व्यक्ति पर न छोड़े।

चरण 2: विकल्पों का मिलान करें (A) सामूहिक और (C) सामाजिक स्वच्छता के व्यापक प्रभाव बताते हैं, पर यहाँ पूछे गए उत्तर के लिए गद्यांश का सीधा शब्द व्यक्तिगत है। (B) पारिवारिक केवल परिवार तक जिम्मेदारी सीमित करता है। गांधी जी का आग्रह हर व्यक्ति से है, इसलिए (D) ही पाठ के स्पष्ट कथन से मेल खाता है।

चरण 3: निष्कर्ष स्वच्छता व्यक्तिगत जिम्मेदारी है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: गद्यांश में जिम्मेदारी शब्द के साथ प्रयुक्त विशेषण खोजकर उत्तर चुनें।

2(a). अलग नगर के कोलाहल से, अलग पुरी-पुरजन से
कठिन साधना में उद्योगी लगा हुआ तन-मन से।
निज समाधि में निरत, सदा निज कर्मठता में चूर,
वन्यकुसुम-सा खिला कर्ण, जग की आँखों से दूर।
नहीं फूलते कुसुम मात्र राजाओं के उपवन में,
अमित बार खिलते वे पुर से दूर कुञ्ज-कानन में।
समझे कौन रहस्य ? प्रकृति का बड़ा अनोखा हाल
गुदड़ी में रखती चुन-चुन कर बड़े कीमती लाल।
जलद-पटल में छिपा, किंतु रवि कब तक रह सकता है ?
युग की अवहेलना शूरमा कब तक सह सकता है ?
पाकर समय एक दिन आखिर उठी जवानी जाग,
फूट पड़ी सबके समक्ष पौरुष की पहली आग।
रंगभूमि में अर्जुन था सब समाँ अनोखा बाँधे
बढ़ा भीड़-भीतर से सहसा कर्ण शरासन साधे।
कहता हुआ, 'तालियों से क्या रहा गर्व में फूल ?
अर्जुन ! तेरा सुयश अभी क्षण में होता है धूल।'
तूने जो जो किया, उसे मैं भी दिखला सकता हूँ,
चाहे तो कुछ नयी कलाएँ भी सिखला सकता हूँ।
आँख खोलकर देख, कर्ण के हाथों का व्यापार
फूले सस्ता सुयश प्राप्त कर, उस नर को धिक्कार।। [5 अंक]

2(a)(i). काव्यांश में कठिन साधना में निरत किसे बताया गया है ? [1 अंक]

(A) कर्ण

(B) अर्जुन

(C) भीम

(D) दुर्योधन

सही उत्तर: (A) कर्ण

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में साधना करने वाले पात्र का नाम और उससे जुड़े संकेत पहचानना।
- उत्तर का चयन केवल दिए गए पाठ के प्रमाण और संदर्भ के आधार पर करना।

चरण 1: निर्णायक पंक्ति पहचानें कवि नगर के कोलाहल और लोगों से दूर तन-मन लगाकर कठिन साधना करने वाले व्यक्ति का वर्णन करता है। इसके बाद सीधे कहा गया है कि वन्यकुसुम के समान कर्ण संसार की आँखों से दूर खिला। इससे स्पष्ट है कि पहले वर्णित साधक कर्ण ही है।

चरण 2: अन्य पात्रों की भूमिका जाँचें (B) अर्जुन का उल्लेख रंगभूमि में प्रदर्शन करने वाले योद्धा के रूप में हुआ है, एकांत में साधना करने वाले के रूप में नहीं। (C) भीम और (D) दुर्योधन का इस काव्यांश में कठिन साधना के प्रसंग में उल्लेख ही नहीं है। अतः इनमें से किसी को चुनने का पाठ में आधार नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष कठिन साधना में निरत कर्ण है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: पात्र का नाम बाद की पंक्ति में आए तो उसे पहले वर्णित क्रिया से जोड़कर पढ़ें।

2(a)(ii). प्रकृति का रहस्य समझ से परे क्यों होता है ? [1 अंक]

(A) शक्ति और सामर्थ्य से अलग घटना होने से

(B) प्रकृति में विद्यमान भिन्नताओं से

(C) प्रकृति के रहस्यों से अनजान रहने से

(D) मनुष्य का अपना सीमित सामर्थ्य होने से

सही उत्तर: (A) शक्ति और सामर्थ्य से अलग घटना होने से

हल:

अवधारणा:

- काव्य-पंक्तियों में निहित अप्रत्याशित प्रतिभा के उदय का भाव समझना।
- उत्तर का चयन केवल दिए गए पाठ के प्रमाण और संदर्भ के आधार पर करना।

चरण 1: उदाहरणों का आशय समझें कवि कहता है कि फूल केवल राजाओं के उपवनों में नहीं खिलते; वे नगर से दूर वनों में भी खिलते हैं। इसी प्रकार प्रकृति गुदड़ी में कीमती लाल रखती है। अभावपूर्ण और साधारण परिस्थितियों में भी असाधारण प्रतिभा पैदा होना सामान्य बाहरी अपेक्षा से अलग घटना है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करें (A) का संकेत इसी ओर है कि दिखाई देने वाली शक्ति और सामर्थ्य के अनुरूप ही परिणाम नहीं होते। (B) केवल सामान्य भिन्नताओं की बात करता है, प्रतिभा और परिवेश के इस विरोध का आशय नहीं बताता। (C) अनजान रहने और (D) सीमित मानवीय सामर्थ्य का कारण काव्यांश में नहीं दिया गया। संदर्भानुसार (A) सबसे उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रकृति बाहरी शक्ति और सामर्थ्य से अलग अप्रत्याशित घटना दिखाती है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: गुदड़ी में लाल और वन में फूल वाले दोनों उदाहरणों का साझा भाव लेकर विकल्प जाँचें।

2(a)(iii). जलद-पटल में छिपा, किंतु रवि कब तक रह सकता है – पंक्ति का भाव है – [1 अंक]

(A) बादल सूर्य को ढक नहीं सकता।

(B) प्रतिभा को छिपाया नहीं जा सकता।

(C) बादल रूपी चादर सूर्य को ढक लेती है।

(D) सूर्य शक्ति का प्रतीक है।

सही उत्तर: (B) प्रतिभा को छिपाया नहीं जा सकता।

हल:

अवधारणा:

- काव्य में बिंब का संदर्भानुकूल प्रतीकात्मक अर्थ पहचानना।
- उत्तर का चयन केवल दिए गए पाठ के प्रमाण और संदर्भ के आधार पर करना।

चरण 1: बिंब को प्रसंग से जोड़ें जलद-पटल का अर्थ बादलों का आवरण और रवि का अर्थ सूर्य है। जैसे बादलों में छिपा सूर्य हमेशा छिपा नहीं रहता, वैसे ही उपेक्षित कर्ण की प्रतिभा भी सदा अनदेखी नहीं रह सकती। अगली पंक्ति में शूरमा द्वारा युग की अवहेलना सहने की सीमा इसी भाव को स्पष्ट करती है।

चरण 2: विकल्पों को परखें (A) केवल बादल और सूर्य का शाब्दिक कथन है तथा आवरण को अस्थायी मानने का पूरा भाव नहीं देता। (C) बादलों के ढक लेने की बात तक सीमित है। (D) सूर्य को शक्ति का प्रतीक बताता है, पर प्रतिभा के प्रकट होने का केंद्रीय संदेश नहीं पकड़ता। (B) छिपी प्रतिभा के अंततः उजागर होने का आशय सही बताता है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रतिभा को सदा छिपाया नहीं जा सकता। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: किसी बिंब का भावार्थ निकालते समय उसके तुरंत बाद की पंक्ति भी अवश्य पढ़ें।

2(a)(iv). कर्ण ने अर्जुन को क्यों ललकारा होगा ? [1 अंक]

(A) अपनी धनुर्विद्या दिखाने के लिए

(B) अपनी योग्यता बताने के लिए

(C) अर्जुन से अपने को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए

(D) समाज को अपनी कला दिखाने के लिए

सही उत्तर: (C) अर्जुन से अपने को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- कर्ण अर्जुन से स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करना चाहता है।
- उत्तर चुनते समय पद्यांश के निर्णायक शब्दों और उनके प्रसंगगत अर्थ का मिलान किया जाता है।

चरण 1: पद्यांश से प्रमाण कर्ण अर्जुन के किए हुए करतब दोहराने और कुछ नई कलाएँ सिखाने का दावा करता है। इससे वह अर्जुन से श्रेष्ठ सिद्ध होने की चुनौती देता है। उसका ललकारना प्रतियोगी चुनौती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण केवल धनुर्विद्या दिखाना (A), सामान्य योग्यता बताना (B) और समाज को कला दिखाना (D) व्यापक उद्देश्य हैं; यहाँ अर्जुन के साथ सीधी तुलना और उससे आगे निकलने का दावा है।

चरण 3: निष्कर्ष कर्ण ने अर्जुन से अपने को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए उसे ललकारा होगा। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: विकल्प चुनने से पहले संबंधित पंक्ति रेखांकित करें और उसके सीधे भाव से हर विकल्प का मिलान करें।

2(a)(v). कर्ण किस प्रकार के मनुष्य को धिक्कारता है ? [1 अंक]

(A) कायर मनुष्य को

(B) वीरता दिखलाने वाले को

(C) सस्ती लोकप्रियता वाले को

(D) अपनी प्रशंसा में रत रहने वाले को

सही उत्तर: (C) सस्ती लोकप्रियता वाले को

हल:

अवधारणा:

- कर्ण सस्ता यश प्राप्त करके इतराने वाले व्यक्ति को धिक्कारता है।
- उत्तर चुनते समय पद्यांश के निर्णायक शब्दों और उनके प्रसंगगत अर्थ का मिलान किया जाता है।

चरण 1: पद्यांश से प्रमाण निर्णायक पंक्ति है, "फूले सस्ता सुयश प्राप्त कर, उस नर को धिक्कार"। इसमें सस्ता सुयश का अर्थ सहज प्राप्त की हुई सस्ती लोकप्रियता है। कर्ण ऐसी लोकप्रियता पाकर फूलने वाले व्यक्ति की आलोचना करता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण कायरता (A) और वीरता दिखाना (B) यहाँ आलोचना के कारण नहीं हैं। अपनी प्रशंसा में रत रहना (D) अहंकार से जुड़ा निकट भाव है, पर पंक्ति में स्वयं की प्रशंसा करते रहने का उल्लेख नहीं है। सस्ता सुयश सीधे सस्ती लोकप्रियता वाले विकल्प (C) से मेल खाता है।

चरण 3: निष्कर्ष कर्ण सस्ती लोकप्रियता वाले मनुष्य को धिक्कारता है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: विकल्प चुनने से पहले संबंधित पंक्ति रेखांकित करें और उसके सीधे भाव से हर विकल्प का मिलान करें।

अथवा

2(b). हो गया पूर्ण अज्ञातवास,
पांडव लौटे वन से सहास,
पावक में कनक-सदृश तप कर
वीरत्व लिए कुछ और प्रखर
नस-नस में तेज-प्रवाह लिये,
कुछ और नया उत्साह लिये।
सच है, विपत्ति जब आती है
कायर को ही दहलाती है,
शूरमा नहीं विचलित होते,
क्षण एक नहीं धीरज खोते,
विघ्नों को गले लगाते हैं,
काँटों में राह बनाते हैं।
मुख से न कभी उफ कहते हैं,
संकट का चरण न गहते हैं,
जो आ पड़ता सब सहते हैं
उद्योग निरत नित रहते हैं
भूलों का मूल नसाने को
खुद बढ़ विपत्ति पर छाने को।
है कौन विघ्न ऐसा जग में
टिक सके वीर नर के मग में
खम ठोंक ठेलता है जब नर,

पर्वत के जाते पाँव उखड़।
मानव जब जोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है। [5 अंक]

2(b)(i). 'अज्ञातवास' का अर्थ है ? [1 अंक]

(A) वन में बसना
(B) गाँव में बसना
(C) अनजान स्थान पर रहना
(D) गुप्त रूप से रहना

सही उत्तर: (D) गुप्त रूप से रहना

हल:

अवधारणा:

- अज्ञातवास में व्यक्ति अपनी पहचान छिपाकर रहता है।
- उत्तर चुनते समय पद्यांश के निर्णायक शब्दों और उनके प्रसंगगत अर्थ का मिलान किया जाता है।

चरण 1: पद्यांश से प्रमाण अज्ञात का संबंध यहाँ पहचान प्रकट न होने से है। पांडवों का अज्ञातवास पूरा होना बताता है कि उनकी पहचान गुप्त रखने की अवधि समाप्त हुई।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण वन में रहना (A) वनवास है और गाँव में रहना (B) केवल स्थान बताता है। अनजान स्थान पर रहना (C) पहचान छिपाना आवश्यक नहीं बनाता। इसलिए गुप्त रूप से रहना ही विशिष्ट अर्थ है।

चरण 3: निष्कर्ष 'अज्ञातवास' का अर्थ गुप्त रूप से रहना है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: विकल्प चुनने से पहले संबंधित पंक्ति रेखांकित करें और उसके सीधे भाव से हर विकल्प का मिलान करें।

2(b)(ii). पांडव वन से किस रूप में लौटे थे ? [1 अंक]

(A) कमजोर होकर
(B) दृढ़ होकर
(C) निर्विकार भाव से
(D) बदले की भावना से

सही उत्तर: (B) दृढ़ होकर

हल:

अवधारणा:

- पांडव कठिन अनुभवों से अधिक दृढ़ और उत्साही होकर लौटे।
- उत्तर चुनते समय पद्यांश के निर्णायक शब्दों और उनके प्रसंगगत अर्थ का मिलान किया जाता है।

चरण 1: पद्यांश से प्रमाण "पावक में कनक-सदृश तप कर" तथा "वीरत्व लिए कुछ और प्रखर" बताता है कि विपत्तियों ने उनके साहस और वीरता को निखारा।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण कमजोर होना (A) प्रखर वीरत्व के विपरीत है। निर्विकार भाव (C) बढ़े उत्साह को नहीं बताता और बदले की भावना (D) इन पंक्तियों में व्यक्त नहीं है। इसलिए दृढ़ होकर लौटना प्रसंग के अनुकूल है।

चरण 3: निष्कर्ष पांडव वन से दृढ़ होकर लौटे थे। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: विकल्प चुनने से पहले संबंधित पंक्ति रेखांकित करें और उसके सीधे भाव से हर विकल्प का मिलान करें।

2(b)(iii). विपत्ति में किसे घबराहट होती है ? [1 अंक]

(A) कायर को

(B) कमजोर को

(C) साहसी को

(D) वीर को

सही उत्तर: (A) कायर को

हल:

अवधारणा:

- कवि विपत्ति के सामने कायर और वीर की भिन्न प्रतिक्रियाएँ दिखाता है।
- उत्तर चुनते समय पद्यांश के निर्णायक शब्दों और उनके प्रसंगगत अर्थ का मिलान किया जाता है।

चरण 1: पद्यांश से प्रमाण पंक्ति "सच है, विपत्ति जब आती है, कायर को ही दहलाती है" सीधे उत्तर देती है। दहलाना भयभीत करना है, इसलिए घबराहट कायर को होती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण कमजोर (B) सामान्य शब्द है, पर कविता में स्पष्ट रूप से कायर कहा गया है। साहसी (C) और वीर (D) विचलित नहीं होते, धैर्य बनाए रखते हैं और बाधाओं का सामना करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष विपत्ति में कायर को घबराहट होती है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: विकल्प चुनने से पहले संबंधित पंक्ति रेखांकित करें और उसके सीधे भाव से हर विकल्प का मिलान करें।

2(b)(iv). 'पर्वत के जाते पाँव उखड़' – पंक्ति का भाव है [1 अंक]

(A) उत्साह का संचार होना

(B) कठिनाइयों का समाप्त होना

(C) अवरोध का सामने आना

(D) हिम्मत का समाप्त होना

सही उत्तर: (B) कठिनाइयों का समाप्त होना

हल:

अवधारणा:

- पर्वत यहाँ मार्ग की विशाल बाधाओं का प्रतीक है।
- उत्तर चुनते समय पद्यांश के निर्णायक शब्दों और उनके प्रसंगगत अर्थ का मिलान किया जाता है।

चरण 1: पद्यांश से प्रमाण "खम ठोंक ठेलता है जब नर" के बाद पर्वत के पाँव उखड़ने का वर्णन आता है। इसका आशय है कि दृढ़ प्रयत्न के सामने बड़ी कठिनाइयाँ भी टिक नहीं पातीं।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण उत्साह का संचार (A) प्रयत्न की प्रेरणा हो सकता है, पर पंक्ति बाधा हटने का परिणाम बताती है। अवरोध का सामने आना (C) और हिम्मत समाप्त होना (D) इसके उलटे अर्थ हैं।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का भाव कठिनाइयों का समाप्त होना है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: विकल्प चुनने से पहले संबंधित पंक्ति रेखांकित करें और उसके सीधे भाव से हर विकल्प का मिलान करें।

2(b)(v). 'मानव जब जोर लगाता है' – पंक्ति में मनुष्य के किस प्रकार के गुण की ओर संकेत है ? [1 अंक]

(A) साहस

(B) शक्ति

(C) परिश्रम

(D) समर्पण

सही उत्तर: (C) परिश्रम

हल:

अवधारणा:

- लगातार उद्योग और प्रयत्न असंभव दिखाई देने वाले कार्य को संभव बनाते हैं।
- उत्तर चुनते समय पद्यांश के निर्णायक शब्दों और उनके प्रसंगगत अर्थ का मिलान किया जाता है।

चरण 1: पद्यांश से प्रमाण "उद्योग निरत नित रहते हैं" और "मानव जब जोर लगाता है" को साथ पढ़ने पर मनुष्य की कर्मशीलता स्पष्ट होती है। पत्थर का पानी बनना उसके अथक परिश्रम के प्रभाव का प्रतीक है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण साहस (A) और शक्ति (B) सहायक गुण हैं, लेकिन यहाँ जोर लगाना सक्रिय श्रम को व्यक्त करता है। समर्पण (D) निष्ठा बताता है, जबकि कथन का केंद्र कठिन प्रयास से परिणाम प्राप्त करना है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति में मनुष्य के परिश्रम गुण की ओर संकेत है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: विकल्प चुनने से पहले संबंधित पंक्ति रेखांकित करें और उसके सीधे भाव से हर विकल्प का मिलान करें।

3(i). 'न्यूजपेग' से आप क्या समझते हैं ? [1 अंक]

(A) कथात्मक शैली में लेखन

(B) आलेख की तरह लेखन

(C) केस स्टडी प्रारूप में लेखन

(D) अन्य खबर से जोड़ कर लेखन

सही उत्तर: (D) अन्य खबर से जोड़ कर लेखन

हल:

अवधारणा:

- न्यूजपेग में किसी विषय या लेख को किसी ताज़ा खबर अथवा घटना से जोड़ा जाता है। इससे लेख की तात्कालिक प्रासंगिकता स्पष्ट होती है।
- सही विकल्प चुनते समय प्रश्न के मूल आशय और अन्य विकल्पों के अंतर को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: अर्थ और प्रयोजन समझें यहाँ मुख्य बात लेखन की भाषा या प्रस्तुति नहीं, बल्कि किसी खबर के सहारे विषय को वर्तमान संदर्भ से जोड़ना है। इसी आधार पर पाठक समझता है कि उस विषय पर अभी चर्चा क्यों की जा रही है।

चरण 2: विकल्पों का मिलान करें कथात्मक शैली कहानी कहने का ढंग है। आलेख की तरह लेखन एक विधा का संकेत है। केस स्टडी किसी विशेष उदाहरण का अध्ययन है। इनमें से कोई न्यूजपेग की परिभाषा नहीं है; अन्य खबर से जोड़कर लेखन ही उसका आशय है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (D) है: अन्य खबर से जोड़ कर लेखन।

त्वरित सुझाव: न्यूजपेग पहचानते समय विषय को ताज़ा खबर से जोड़ने वाले संकेत पर ध्यान दें।

3(ii). समाचार पत्रों को सामान्य समाचारों से अलग हटकर विशेष क्षेत्रों के बारे में जानकारी क्यों देनी पड़ती है ? [1 अंक]

(A) बाजार में टिके रहने के लिए

(B) सभी तरह के विषयों पर लेखन के लिए

(C) पाठकों की रुचियों के लिए

(D) विज्ञापन प्राप्त करने के लिए

सही उत्तर: (C) पाठकों की रुचियों के लिए

हल:

अवधारणा:

- विशेष लेखन पाठकों की अलग-अलग रुचियों और विशिष्ट जानकारी की आवश्यकता को पूरा करता है। सामान्य समाचार हर क्षेत्र की गहराई नहीं दे सकते।
- सही विकल्प चुनते समय प्रश्न के मूल आशय और अन्य विकल्पों के अंतर को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: पाठक की आवश्यकता पहचानें किसी पाठक की रुचि खेल में होती है, किसी की विज्ञान, अर्थव्यवस्था या अन्य क्षेत्रों में। समाचार पत्र इन क्षेत्रों की विशेष जानकारी देकर पाठकों की जिज्ञासा और विषयगत जरूरतों को पूरा करते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों को परखें बाजार में टिकना और विज्ञापन पाना व्यावसायिक परिणाम हो सकते हैं, किंतु यहाँ विशेष जानकारी देने का मुख्य कारण पूछा गया है। सभी विषयों पर लेखन कहना भी पाठकों की विशिष्ट रुचि का कारण स्पष्ट नहीं करता।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) है: पाठकों की रुचियों के लिए।

त्वरित सुझाव: विशेष लेखन के उद्देश्य वाले प्रश्न में पाठकों की विषयगत रुचि को आधार बनाएँ।

3(iii). बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को पत्रकारिता जगत में किस नाम से बुलाते हैं ? [1 अंक]

(A) संवाददाता

(B) अंशकालिक पत्रकार

(C) पूर्णकालिक पत्रकार

(D) फ्रीलांस पत्रकार

सही उत्तर: (A) संवाददाता

हल:

अवधारणा:

- बीट पत्रकारिता में किसी निर्धारित क्षेत्र या विषय की नियमित समाचार कवरेज को कहते हैं। उस क्षेत्र की खबरें जुटाने वाला रिपोर्टर संवाददाता कहलाता है।
- सही विकल्प चुनते समय प्रश्न के मूल आशय और अन्य विकल्पों के अंतर को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: दायित्व से नाम पहचानें बीट कवर करने वाला रिपोर्टर अपने निर्धारित क्षेत्र की घटनाओं, व्यक्तियों और संस्थाओं से संपर्क रखता है तथा समाचार भेजता है। प्रश्न इसी समाचार-संकलन संबंधी भूमिका का नाम पूछता है।

चरण 2: नियुक्ति और भूमिका अलग करें अंशकालिक और पूर्णकालिक शब्द पत्रकार के काम के समय या नियुक्ति से संबंधित हैं। फ्रीलांस पत्रकार स्वतंत्र रूप से विभिन्न संस्थानों के लिए काम करता है। ये बीट कवर करने वाले रिपोर्टर की भूमिका के विशेष नाम नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (A) है: संवाददाता।

त्वरित सुझाव: बीट को निश्चित समाचार क्षेत्र समझें और रिपोर्टर की भूमिका को नियुक्ति की शर्तों से अलग रखें।

3(iv). संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय लेखन को माना जाता है – [1 अंक]

(A) संपादक की आवाज़

(B) पत्रकार की आवाज़

(C) अख़बार की आवाज़

(D) पाठक की आवाज़

सही उत्तर: (C) अख़बार की आवाज़

हल:

अवधारणा:

- संपादकीय किसी महत्त्वपूर्ण मुद्दे पर समाचार पत्र की संस्थागत राय प्रस्तुत करता है। इसलिए उसे अख़बार की आवाज़ माना जाता है।
- सही विकल्प चुनते समय प्रश्न के मूल आशय और अन्य विकल्पों के अंतर को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: संपादकीय का स्वर पहचानें संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित संपादकीय लेख अख़बार की नीति और दृष्टिकोण के अनुरूप किसी घटना का विश्लेषण करते हैं। उसमें व्यक्त मत केवल किसी व्यक्ति की निजी राय के रूप में प्रस्तुत नहीं होता।

चरण 2: विकल्पों का अंतर समझें संपादक संपादकीय लिख या निर्देशित कर सकता है, फिर भी संपादकीय का स्वर अख़बार का होता है। पत्रकार की व्यक्तिगत राय और पाठकों के पत्र अलग श्रेणियाँ हैं। अतः संपादक, पत्रकार और पाठक की आवाज़ वाले विकल्प उपयुक्त नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) है: अख़बार की आवाज़।

त्वरित सुझाव: संपादकीय के लिए व्यक्तिगत लेखक की जगह समाचार पत्र की संस्थागत राय याद रखें।

3(v). फीचर को किस प्रकार का लेखन माना जाता है ? [1 अंक]

(A) कथात्मक

(B) आत्मनिष्ठ

(C) वर्णनात्मक

(D) विवरणात्मक

सही उत्तर: (B) आत्मनिष्ठ

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर में लेखक अपनी संवेदना, दृष्टि और अनुभव के सहारे विषय को रोचक ढंग से प्रस्तुत करता है। इस कारण उसे आत्मनिष्ठ लेखन माना जाता है।
- सही विकल्प चुनते समय प्रश्न के मूल आशय और अन्य विकल्पों के अंतर को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: लेखक की भूमिका समझें फ़ीचर तथ्यों पर आधारित होते हुए भी समाचार की तरह केवल सूचना देने तक सीमित नहीं रहता। विषय के चयन, दृश्य निर्माण और प्रस्तुति में लेखक की निजी अनुभूति तथा रचनात्मक दृष्टि का महत्त्व रहता है।

चरण 2: अन्य विशेषताओं से अंतर करें कथात्मक, वर्णनात्मक और विवरणात्मक ढंग फ़ीचर की प्रस्तुति में आ सकते हैं। किंतु वे यहाँ पूछे गए उसके मूल स्वभाव को उतनी स्पष्टता से नहीं बताते। लेखक की संवेदना और दृष्टिकोण की प्रधानता के कारण आत्मनिष्ठ विकल्प सही है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (B) है: आत्मनिष्ठ।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर में तथ्य के साथ लेखक की संवेदना और निजी दृष्टि की भूमिका पहचानें।

4. छोटा मेरा खेत चौकोना
कागज का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष;
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष। [5 अंक]

4(i). काव्यांश में प्रयुक्त 'खेत' का अर्थ है – [1 अंक]

(A) जमीन
(B) कागज
(C) भाव
(D) शब्द

सही उत्तर: (B) कागज

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में कविता की रचना को खेती के रूपक से समझाया गया है। कागज वह आधार है जिस पर भाव शब्दों के रूप में विकसित होते हैं।
- सही विकल्प चुनते समय प्रश्न के मूल आशय और अन्य विकल्पों के अंतर को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: सीधा पाठ-साक्ष्य देखें आरंभिक पंक्तियाँ हैं: 'छोटा मेरा खेत चौकोना / कागज का एक पन्ना'। दूसरी पंक्ति स्वयं स्पष्ट करती है कि कवि अपने कागज के पन्ने को छोटा चौकोना खेत कह रहा है।

चरण 2: अन्य विकल्पों को अलग करें जमीन खेत का सामान्य अर्थ है, किंतु यहाँ रूपक प्रयुक्त है। भाव बीज के रूप में आते हैं और शब्द अंकुर के रूप में विकसित होते हैं। इसलिए भाव और शब्द भी खेत के अर्थ नहीं हैं। खेत का प्रतीकात्मक अर्थ कागज है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (B) है: कागज।

त्वरित सुझाव: रूपक के प्रश्न में पास की पंक्तियों में दिए सीधे संकेत से प्रतीक का अर्थ तय करें।

4(ii). 'कोई अंधड़ कहीं से आया' – पंक्ति में प्रयुक्त अंधड़ का अर्थ है – [1 अंक]

(A) तूफान
(B) धूल भरी आँधी
(C) भावों की आँधी
(D) कठिनाइयाँ

सही उत्तर: (C) भावों की आँधी

हल:

अवधारणा:

- कविता में अंधड़ रचनाकार के मन में अचानक उठने वाले भावों के तीव्र आवेग का प्रतीक है। इसी आवेग से रचना का प्रेरक बीज मिलता है।

- सही विकल्प चुनते समय प्रश्न के मूल आशय और अन्य विकल्पों के अंतर को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: रचना-प्रक्रिया का संदर्भ देखें 'कोई अंधड़ कहीं से आया' के बाद क्षण का बीज बोए जाने की बात है। आगे कल्पना तथा शब्दों के अंकुर का उल्लेख बताता है कि यह बाहरी मौसम नहीं, भीतर की सृजनात्मक हलचल है।

चरण 2: शाब्दिक विकल्पों को परखें तूफान और धूल भरी आँधी अंधड़ के सामान्य भौतिक अर्थ हैं। यहाँ वे कविता की रचना का संदर्भ स्पष्ट नहीं करते। कठिनाइयों का भी इस अंश में संकेत नहीं है। भावों की आँधी इस सृजनात्मक आवेग को सही व्यक्त करती है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (C) है: भावों की आँधी।

त्वरित सुझाव: अंधड़ के अर्थ को अकेले शब्द से नहीं, बीज और कल्पना वाली अगली पंक्तियों से जोड़ें।

4(iii). बीज का अस्तित्व किसके संसर्ग से गल गया ? [1 अंक]

(A) कल्पना

(B) धरती

(C) भाव

(D) कविता

सही उत्तर: (A) कल्पना

हल:

अवधारणा:

- भावना रूपी बीज कल्पना के संपर्क में आकर अपना अलग अस्तित्व खोता है। उसी रूपांतरण से रचना के शब्द विकसित होने लगते हैं।
- सही विकल्प चुनते समय प्रश्न के मूल आशय और अन्य विकल्पों के अंतर को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: निर्णायक पंक्तियाँ पढ़ें कवि कहता है: 'कल्पना के रसायनों को पी / बीज गल गया निःशेष'। यहाँ स्पष्ट रूप से बीज के गलने का संबंध कल्पना के रसायनों से बताया गया है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण करें धरती खेती के सामान्य संदर्भ में उपयुक्त लग सकती है, पर कविता में उसका ऐसा उल्लेख नहीं है। भाव स्वयं बीज का रूपक है, गलाने वाला तत्व नहीं। कविता इस प्रक्रिया का सर्जनात्मक परिणाम है। इसलिए संसर्ग का सही तत्व कल्पना है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सही उत्तर (A) है: कल्पना।

त्वरित सुझाव: कारण पूछे जाने पर क्रिया से ठीक पहले आए शब्द देखें: यहाँ कल्पना के रसायन निर्णायक हैं।

4(iv). भावना रूप बीजों के गलने से क्या परिणाम मिला ? [1 अंक]

(A) कवि की मेहनत व्यर्थ हो गई

(B) धरती पर अंकुर फूट पड़े

(C) कवि पुन: कल्पना करने लगा

(D) शब्दों के अंकुर फूट पड़े

सही उत्तर: (D) शब्दों के अंकुर फूट पड़े

हल:

अवधारणा:

- कविता में भावना का बीज कल्पना से रूपांतरित होकर शब्दों में अभिव्यक्त होता है। बीज का गलना रचना के विकास की आवश्यक प्रक्रिया है।
- सही विकल्प चुनते समय प्रश्न के मूल आशय और अन्य विकल्पों के अंतर को स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: परिणाम बताने वाली पंक्ति खोजें 'बीज गल गया नि:शेष' के तुरंत बाद 'शब्द के अंकुर फूटे' कहा गया है। यह क्रम बताता है कि भावना के कल्पना में रूपांतरित होने से काव्य के शब्द प्रकट हुए।

चरण 2: भ्रामक परिणाम हटाएँ मेहनत व्यर्थ होने की बात गलत है, क्योंकि आगे विकास और पुष्पित होने का चित्र है। धरती पर वास्तविक अंकुर नहीं निकले; यह काव्य-सृजन का रूपक है। पुन: कल्पना करने लगना भी उल्लिखित परिणाम नहीं है। शब्दों के अंकुर फूटना ही पाठ में दिया परिणाम है।

चरण 3: निष्कर्ष अत: सही उत्तर (D) है: शब्दों के अंकुर फूट पड़े।

त्वरित सुझाव: बीज गलने को नष्ट होना न समझें; अगली पंक्ति में बताए सृजनात्मक परिणाम से उत्तर चुनें।

4(v). 'कल्पना' को रसायन क्यों कहा गया है ? [1 अंक]

(A) सृजन को सुन्दर बनाने में सहायक

(B) सृजन को सरल बनाने में महत्त्वपूर्ण

(C) सृजन के विकास में सहायक तत्त्व

(D) सृजन का मूलभूत तत्त्व

सही उत्तर: (C) सृजन के विकास में सहायक तत्त्व

हल:

अवधारणा:

- कविता में कागज खेत, भाव बीज तथा कल्पना पोषण देने वाला रसायन है।
- रूपक के अर्थ को बीज से शब्दों के अंकुर और पुष्प बनने की प्रक्रिया से समझना चाहिए।

चरण 1: पंक्तियों का संबंध समझें कवि कहता है कि कल्पना के रसायनों को पीकर बीज गल गया और शब्दों के अंकुर फूटे। इससे स्पष्ट है कि कल्पना भाव रूपी बीज को विकसित करके कविता का रूप देने में सहायता करती है। जिस तरह रसायन फसल की वृद्धि में योगदान देता है, उसी तरह कल्पना सृजन को विकसित करती है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (C) विकास में सहायक तत्त्व इस प्रक्रिया का सही अर्थ बताता है। (A) केवल सुंदरता तक अर्थ सीमित कर देता है। (B) सरल बनाने की बात करता है, जिसका वर्णन पंक्तियों में नहीं है। (D) मूलभूत तत्त्व कहता है, जबकि यहाँ बीज भाव का है और कल्पना उसके विकास का साधन है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) सृजन के विकास में सहायक तत्त्व है।

त्वरित सुझाव: बीज, रसायन और अंकुर के रूपक में रसायन की भूमिका विकास से जोड़कर विकल्प चुनें।

5. बाजार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाजार की अनेकानेक चीजों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई, उस वक्त जेब भरी तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है। मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान जरूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है। [5 अंक]

5(i). बाजार को जादू क्यों कहा गया है ? [1 अंक]

(A) आपूर्ति करने के कारण

(B) भ्रम पैदा करने के कारण

(C) बाज़ार की महिमा के कारण

(D) जरूरत पैदा करने के कारण

सही उत्तर: (B) भ्रम पैदा करने के कारण

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में बाजार का जादू वस्तुओं के रूप से पैदा होने वाला आकर्षण है।
- वास्तविक आवश्यकता और आकर्षण से उत्पन्न भ्रम में अंतर पहचानना चाहिए।

चरण 1: निर्णायक कथन देखें गद्यांश में कहा गया है कि बाजार के प्रभाव में सभी सामान जरूरी और आराम बढ़ाने वाले मालूम होते हैं। अंत में लेखक स्पष्ट करता है कि यह सब जादू का असर है। अत: वस्तुओं की आवश्यकता का यह अनुभव हमेशा वास्तविक नहीं होता; आकर्षण व्यक्ति को भ्रमित करता है।

चरण 2: विकल्पों का अर्थ परखें (B) भ्रम पैदा करना बाजार को जादू कहने का उपयुक्त कारण है। (A) आपूर्ति बाजार का सामान्य कार्य है, जादू का कारण नहीं। (C) महिमा कहना उसी प्रशंसा को दोहराता है, प्रभाव नहीं समझाता। (D) जरूरत पैदा करना आकर्षक लगता है, पर यहाँ असली जरूरत बनने के बजाय हर वस्तु जरूरी लगने का भ्रम प्रमुख है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) भ्रम पैदा करने के कारण है।

त्वरित सुझाव: हर सामान जरूरी लगने और सामान वास्तव में जरूरी होने के अंतर से बाजार के जादू का अर्थ पहचानें।

5(ii). 'जादू की मर्यादा' से आप क्या समझते हैं ? [1 अंक]

(A) प्रभाव की सीमा

(B) जादू का असर

(C) रूप के समान

(D) निश्चित प्रभाव

सही उत्तर: (A) प्रभाव की सीमा

हल:

अवधारणा:

- मर्यादा शब्द का अर्थ प्रसंग के अनुसार सीमा है।
- चुंबक और लोहे की उपमा बाजार के आकर्षण की सीमित पहुँच स्पष्ट करती है।

चरण 1: उपमा से आशय निकालें लेखक बताता है कि चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है। इसी प्रकार बाजार का आकर्षण भी हर मन:स्थिति पर समान रूप से असर नहीं करता। मन की दशा के अनुसार उसका प्रभाव बदलता है। इसलिए जादू की मर्यादा का अर्थ उसके असर की सीमा है।

चरण 2: अन्य विकल्प जाँचें (A) प्रभाव की सीमा उपमा और मर्यादा दोनों का सटीक अर्थ है। (B) जादू का असर केवल प्रभाव का नाम बताता है, उसकी सीमा नहीं। (C) रूप के समान का मर्यादा से कोई अर्थगत संबंध नहीं। (D) निश्चित प्रभाव कहने से असर का बँधा हुआ परिणाम निकलता है, जबकि कथन उसकी सीमा समझाता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) प्रभाव की सीमा है।

त्वरित सुझाव: मर्यादा का अर्थ चुनते समय चुंबक का प्रभाव केवल लोहे पर पड़ने वाली उपमा को आधार बनाएँ।

5(iii). बाजार का असर कब अधिक होता है ? [1 अंक]

(A) जेब और मन खाली होने पर

(B) जेब और मन भरे होने पर

(C) जेब भरी और मन खाली होने पर

(D) जेब खाली और मन भरे होने पर

सही उत्तर: (C) जेब भरी और मन खाली होने पर

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में प्रभाव की सर्वाधिक तीव्रता पूछी गई है।
- भरी जेब खरीदने की क्षमता और खाली मन अनियंत्रित इच्छाओं का संकेत है।

चरण 1: स्पष्ट वाक्य पहचानें गद्यांश में सीधे कहा गया है कि जेब भरी हो और मन खाली हो तो जादू का असर खूब होता है। खाली मन बाजार की अनेक चीजों का निमंत्रण स्वीकार करता है और भरी जेब उन्हें खरीदने की सुविधा देती है। दोनों स्थितियाँ मिलने पर आकर्षण अधिक प्रभावी होता है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करें (C) मुद्रित कथन का पूरा अर्थ देता है। (A) में जेब खाली होने से खरीदने की क्षमता नहीं है। (B) में मन भरा है, इसलिए वह हर वस्तु की ओर नहीं दौड़ता। (D) में मन भरा और जेब खाली है, इसलिए यह अधिक प्रभाव वाली स्थिति नहीं। केवल धन होना पर्याप्त नहीं; मन का खाली होना भी आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) जेब भरी और मन खाली होने पर है।

त्वरित सुझाव: अधिक असर वाले प्रश्न में गद्यांश के खूब होता है वाले वाक्य की दोनों शर्तें साथ मिलाएँ।

5(iv). मन खाली और जेब भरी होने पर बाजार का प्रभाव कैसा होता है ? [1 अंक]

(A) सहयोगी

(B) उपहासक

(C) मर्यादित

(D) विनाशक

सही उत्तर: (D) विनाशक

हल:

अवधारणा:

- खाली मन में बाजार हर वस्तु की चाह उत्पन्न करता है।
- भरी जेब के साथ विवेकहीन चाह अनावश्यक खरीद और धन के अपव्यय की ओर ले जाती है।

चरण 1: प्रभाव की दिशा समझें मन खाली होने पर व्यक्ति अपनी निश्चित आवश्यकताओं से संचालित नहीं होता। बाजार की हर चीज उसे जरूरी लगती है और वह यह भी लूँ, वह भी लूँ की स्थिति में पहुँच जाता है। जेब भरी होने पर इस चाह को रोकने वाला आर्थिक अवरोध भी कम रहता है। यह स्थिति अनियंत्रित खर्च की ओर ले जाती है।

चरण 2: दिए गए विशेषण परखें (D) विनाशक इस हानिकारक प्रभाव को सबसे ठीक व्यक्त करता है। (A) सहयोगी तब होता जब बाजार वास्तविक जरूरत पूरी करने में सहायता करता। (B) उपहासक का अर्थ मजाक उड़ाने वाला है; यहाँ ऐसा प्रसंग नहीं। (C) मर्यादित उपयुक्त नहीं, क्योंकि दिए हुए प्रसंग में चाह पर नियंत्रण घटता और आकर्षण बहुत बढ़ता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (D) विनाशक है।

त्वरित सुझाव: यह भी लूँ, वह भी लूँ की मनःस्थिति को जरूरत के अनुसार खरीद से अलग करके उसका परिणाम पहचानें।

5(v). बाजार का सभी सामान उपयोगी लगने के क्या कारण हो सकते हैं ? [1 अंक]

(A) जादू का असर

(B) सामान की कमी

(C) सब कुछ खरीदने की इच्छा

(D) संतुलित मन के कारण

सही उत्तर: (A) जादू का असर

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के कारण का उत्तर गद्यांश के अंतिम वाक्य में है।
- सब कुछ खरीदने की इच्छा बाजार के आकर्षण का परिणाम है।

चरण 1: कारण बताने वाली पंक्ति पढ़ें लेखक कहता है कि सभी सामान जरूरी और आराम बढ़ाने वाले मालूम होते हैं, लेकिन यह सब जादू का असर है। इसलिए हर वस्तु उपयोगी दिखने का मूल कारण बाजार का आकर्षण है। व्यक्ति उस समय जरूरत की निष्पक्ष जाँच नहीं कर रहा होता, बल्कि रूप के प्रभाव में आ जाता है।

चरण 2: विकल्पों में अंतर करें (A) जादू का असर लेखक का स्पष्ट उत्तर है। (B) सामान की कमी का कोई उल्लेख नहीं। (C) सब कुछ खरीदने की इच्छा आकर्षण से उत्पन्न परिणाम है; प्रश्न सामान उपयोगी लगने का कारण पूछता है। (D) संतुलित मन के कारण कहना उलटा है, क्योंकि गद्यांश में खाली मन पर प्रभाव की बात है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) जादू का असर है।

त्वरित सुझाव: कारण और परिणाम अलग रखें: बाजार का जादू कारण है और हर सामान खरीदने की इच्छा उसका परिणाम है।

6(i). 'समहाउ इंप्रापर' सिल्वर वैडिंग से लिए इस वाक्यांश में किस प्रकार के भाव की ध्वनि निकलती है ? [1 अंक]

(A) असंतोष की स्थिति

(B) अनिर्णय की स्थिति

(C) असहयोग की स्थिति

(D) असमंजस की स्थिति

सही उत्तर: (A) असंतोष की स्थिति

हल:

अवधारणा:

- यशोधर बाबू बदलती जीवनशैली को अपनी पुरानी मान्यताओं की कसौटी पर देखते हैं।
- समहाउ इंप्रापर में किसी बात को किसी तरह अनुचित मानने का भाव व्यक्त होता है।

चरण 1: वाक्यांश का भाव समझें समहाउ इंप्रापर का आशय है कि कोई बात किसी तरह ठीक नहीं लगती। सिल्वर वैडिंग में यशोधर बाबू नए तौर-तरीकों और परिवार की बदलती सोच से सहज नहीं हो पाते। यह अभिव्यक्ति उनकी उस अप्रसन्नता को प्रकट करती है जिसमें उन्हें कोई व्यवहार अनुचित लगता है।

चरण 2: निकट विकल्पों का अंतर करें (A) असंतोष इस नापसंदगी का सबसे उपयुक्त भाव है। (B) अनिर्णय में निर्णय न ले पाने की स्थिति प्रमुख होती है। (D) असमंजस में उलझन प्रमुख होती है, जबकि इंप्रापर में ठीक न लगने का मूल्यांकन उपस्थित है। (C) असहयोग किसी काम में साथ न देने की क्रिया है, जिसका यह वाक्यांश सीधे संकेत नहीं करता।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) असंतोष की स्थिति है।

त्वरित सुझाव: इंप्रापर में व्यक्त ठीक न लगने के भाव को पकड़ें; केवल समहाउ से अनिर्णय का निष्कर्ष न निकालें।

6(ii). 'जूझ' कहानी के नायक के जीवन में संघर्ष की अधिकता क्यों थी ? [1 अंक]

(A) सहायता नहीं मिलने से

(B) पिता के सहयोगी नहीं होने से

(C) नहीं पढ़ पाने से

(D) खेती का काम करने से

सही उत्तर: (B) पिता के सहयोगी नहीं होने से

हल:

अवधारणा:

- जूझ का नायक शिक्षा प्राप्त करना चाहता है, पर पिता उसकी पढ़ाई में बाधा बनते हैं।
- कथानक में कठिनाई के तात्कालिक कारण और उसके परिणाम में अंतर करना चाहिए।

चरण 1: संघर्ष का मुख्य कारण देखें नायक पढ़ना चाहता है, किंतु पिता उसे पढ़ाई की अपेक्षा खेती के काम में लगाए रखना चाहते हैं। इस विरोध के कारण उसे अपनी शिक्षा जारी रखने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने पड़ते हैं। पिता का सहयोग न मिलना घर और विद्यालय के बीच उसके संघर्ष को तीव्र करता है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करें (B) पिता के सहयोगी नहीं होने से कथानक का विशिष्ट कारण स्पष्ट होता है। (A) सहायता नहीं मिलने से बहुत सामान्य है; नायक को अन्य व्यक्तियों से सहयोग मिलता है। (C) नहीं पढ़ पाना बाधा का परिणाम है। (D) खेती करना कठिनाई बढ़ाता है, पर मूल समस्या पिता द्वारा पढ़ाई के बजाय उसी काम को प्राथमिकता देना है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) पिता के सहयोगी नहीं होने से है।

त्वरित सुझाव: जूझ में संघर्ष का कारण चुनते समय पढ़ने की इच्छा और पिता की अपेक्षाओं के टकराव को केंद्र में रखें।

6(iii). सिंधु सभ्यता के सबसे बड़े शहर का क्या नाम था ? [1 अंक]

(A) कालीबंगा

(B) लोथल

(C) रोपड़

(D) मुअनजो-दड़ो

सही उत्तर: (D) मुअनजो-दड़ो

हल:

अवधारणा:

- सिंधु सभ्यता के नगरों की पहचान पाठ में दिए गए विवरण से की जाती है।
- बहुविकल्पीय उत्तर में पाठ के सटीक प्रसंग से मेल खाने वाला विकल्प चुना जाता है।

चरण 1: पाठ के प्रसंग से उत्तर की पहचान पाठ में मुअनजो-दड़ो सिंधु सभ्यता के सबसे बड़े नगर के रूप में उल्लिखित है। उसके विस्तृत खंडहर, नियोजित सड़कें, स्नानागार और भवन विकसित नगर-जीवन का परिचय देते हैं। प्रश्न इसी नगर की पहचान पूछता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच कालीबंगा, लोथल और रोपड़ भी प्राचीन सभ्यता से संबद्ध स्थल हैं, पर पाठ में सबसे बड़े नगर की पूछी गई पहचान इनसे नहीं होती। अतः विकल्प (A), (B) और (C) इस प्रश्न का उत्तर नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा शहर मुअनजो-दड़ो था। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: सबसे बड़े नगर के प्रश्न को मुअनजो-दड़ो के विस्तृत नगर-विन्यास और महाकुंड से जोड़कर याद रखें।

6(iv). यशोधर बाबू ने दफ्तर की घड़ी को ही सुस्त क्यों ठहराया ? [1 अंक]

(A) घड़ी पुरानी थी।

(B) उनकी घड़ी से नहीं मेल खाने से।

(C) उन्हें जल्दी जाना था।

(D) वे वक्त के पाबंद थे।

सही उत्तर: (B) उनकी घड़ी से नहीं मेल खाने से।

हल:

अवधारणा:

- किसी पात्र की तत्काल प्रतिक्रिया का कारण उस प्रसंग में घटी घटना से पहचानना चाहिए।
- बहुविकल्पीय उत्तर में पाठ के सटीक प्रसंग से मेल खाने वाला विकल्प चुना जाता है।

चरण 1: पाठ के प्रसंग से उत्तर की पहचान यशोधर बाबू ने अपनी घड़ी और दफ्तर की घड़ी के समय में अंतर देखा। अपनी घड़ी का समय सही मानकर उन्होंने दफ्तर की घड़ी को ही सुस्त ठहराया। इस प्रतिक्रिया का सीधा कारण दोनों घड़ियों का आपस में मेल न खाना था।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच घड़ी के पुराने होने का तथ्य इस निर्णय का कारण नहीं दिया गया है, इसलिए (A) अनुचित है। जल्दी जाने की इच्छा (C) और समय के प्रति पाबंदी (D) भी इस विशिष्ट प्रतिक्रिया का प्रत्यक्ष कारण नहीं हैं। पूछा गया कारण समय का अंतर है।

चरण 3: निष्कर्ष उनकी घड़ी से समय मेल न खाने के कारण उन्होंने दफ्तर की घड़ी को सुस्त माना। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: यहाँ सामान्य चरित्र-गुण के बजाय दोनों घड़ियों के समय में अंतर वाली तत्काल घटना को आधार बनाएँ।

6(ix). "पहली ही झलक में हमे अपलक कर दिया" – 'अतीत में दबे पाँव' पाठ से ली गई इस पंक्ति में 'अपलक कर दिया' का अर्थ है – [1 अंक]

(A) आश्चर्यचकित करना

(B) प्रसन्न करना

(C) अभिभूत करना

(D) चिंतित करना

सही उत्तर: (C) अभिभूत करना

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग में प्रयुक्त शब्द का अर्थ केवल शब्दकोश से नहीं, उससे व्यक्त अनुभूति से भी स्पष्ट होता है।
- बहुविकल्पीय उत्तर में पाठ के सटीक प्रसंग से मेल खाने वाला विकल्प चुना जाता है।

चरण 1: पाठ के प्रसंग से उत्तर की पहचान अपलक होने का शाब्दिक भाव है बिना पलक झपकाए देखना। यहाँ पहली झलक का प्रभाव इतना गहरा है कि दर्शक उस दृश्य में डूबकर ठहर जाता है। यह दृश्य की भव्यता से अभिभूत होने की स्थिति है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच विकल्प (A) में केवल आश्चर्य का भाव है, जबकि यहाँ प्रभाव से मुग्ध होकर एकटक देखने की गहरी अनुभूति है। (B) केवल प्रसन्नता बताता है और (D) चिंता का भाव देता है; ये दोनों इस प्रसंग से मेल नहीं खाते।

चरण 3: निष्कर्ष यहाँ 'अपलक कर दिया' का आशय अभिभूत करना है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: अपलक के शाब्दिक अर्थ को दृश्य के गहरे प्रभाव से जोड़ें; केवल सामान्य खुशी या चिंता का अर्थ न चुनें।

6(v). राजस्थान के कुलधारा गाँव के लोग कैसे थे ? [1 अंक]

(A) कायर

(B) निर्बल

(C) दुर्बल

(D) स्वाभिमानी

सही उत्तर: (D) स्वाभिमानी

हल:

अवधारणा:

- किसी समुदाय के चरित्र का निर्धारण उसके निर्णय और मूल्यों से किया जाता है।
- बहुविकल्पीय उत्तर में पाठ के सटीक प्रसंग से मेल खाने वाला विकल्प चुना जाता है।

चरण 1: पाठ के प्रसंग से उत्तर की पहचान कुलधारा के लोगों के प्रसंग में अपने सम्मान की रक्षा का भाव प्रमुख है। वे अन्यायपूर्ण दबाव के सामने झुकने के बजाय अपना गाँव छोड़ने का कठिन निर्णय लेने वाले लोग थे। यह स्वाभिमान का परिचायक है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच कायरता कठिनाई से डरने का भाव है, इसलिए (A) प्रसंग के विपरीत है। निर्बल और दुर्बल, अर्थात विकल्प (B) और (C), भी उनके नैतिक साहस को व्यक्त नहीं करते। सम्मान के लिए कठिन निर्णय लेना स्वाभिमानी होने का प्रमाण है।

चरण 3: निष्कर्ष राजस्थान के कुलधारा गाँव के लोग स्वाभिमानी थे। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: कुलधारा के प्रसंग में गाँव छोड़ने के निर्णय को सम्मान की रक्षा से जोड़कर सही चरित्र-गुण पहचानें।

6(vi). माँ ने कहा "अब तू ही बता, मैं का करूँ ?" – इस कथन में माँ के मन का भाव किस प्रकार का है ? [1 अंक]

(A) विवशता

(B) असमर्थता

(C) शक्तिहीनता

(D) निराशा

सही उत्तर: (A) विवशता

हल:

अवधारणा:

- संवाद में व्यक्त मनोभाव को पात्र की परिस्थिति तथा उसके पास उपलब्ध विकल्पों से पहचाना जाता है।
- बहुविकल्पीय उत्तर में पाठ के सटीक प्रसंग से मेल खाने वाला विकल्प चुना जाता है।

चरण 1: पाठ के प्रसंग से उत्तर की पहचान लेखक पढ़ना चाहता है, लेकिन पिता के विरोध और घर की परिस्थितियों के कारण माँ उसकी इच्छा पूरी करने का स्वतंत्र निर्णय नहीं ले पाती। 'मैं का करूँ?' कहकर वह अपने सामने रास्ता न सूझने और परिस्थितियों में बँधे होने का भाव व्यक्त करती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच असमर्थता (B) और शक्तिहीनता (C) सामान्य क्षमता की कमी बताते हैं; यहाँ मुख्य बात परिस्थितियों का बंधन है। निराशा (D) में आशा समाप्त होने का भाव होता है, जबकि माँ के प्रश्न में उपाय खोजने की इच्छा शेष है। इसलिए विवशता अधिक सटीक है।

चरण 3: निष्कर्ष माँ के कथन में विवशता का भाव है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: 'क्या करूँ?' जैसे प्रश्न में देखें कि पात्र इच्छा न होने से रुकता है या परिस्थितियों से बँधा है।

6(vii). दत्ता जी राव का यह कथन – 'मैं पढ़ाऊँगा तुझे।' – से दत्ता जी की लेखक के प्रति किस प्रकार की भावना प्रकट होती है ? [1 अंक]

(A) लेखक के पिता को छोटा समझना

(B) लेखक को बच्चा समझना

(C) लेखक के प्रति सहानुभूति

(D) लेखक को गरीब समझना

सही उत्तर: (C) लेखक के प्रति सहानुभूति

हल:

अवधारणा:

- चरित्र की भावना उसके कथन के साथ उसके सहयोगपूर्ण व्यवहार से भी स्पष्ट होती है।
- बहुविकल्पीय उत्तर में पाठ के सटीक प्रसंग से मेल खाने वाला विकल्प चुना जाता है।

चरण 1: पाठ के प्रसंग से उत्तर की पहचान दत्ता जी राव लेखक की पढ़ने की इच्छा और उसके मार्ग में आने वाली बाधा को समझते हैं। 'मैं पढ़ाऊँगा तुझे' कहकर वे उसकी शिक्षा में सहायता करने का भरोसा देते हैं। इस कथन में लेखक की स्थिति के प्रति सहानुभूति और सहयोग की भावना है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच विकल्प (A) पिता को छोटा समझने का भाव देता है, जो इस आश्वासन का उद्देश्य नहीं है। (B) केवल आयु और (D) केवल आर्थिक स्थिति की पहचान बताते हैं। इनमें शिक्षा के लिए आगे बढ़कर सहायता करने का संवेदनशील भाव व्यक्त नहीं होता।

चरण 3: निष्कर्ष दत्ता जी राव के कथन में लेखक के प्रति सहानुभूति प्रकट होती है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: किसी पात्र के सहायता के आश्वासन को उसके उद्देश्य से जोड़ें; यहाँ केंद्र लेखक की शिक्षा जारी रखना है।

6(viii). महाकुंड की दीवारों की चिनाई करने के लिए किस सामग्री का प्रयोग किया गया था ? [1 अंक]

(A) चूने और चिरोड़ी का

(B) चूने और रेता का

(C) रेते और बदरपुर का

(D) चूने और सीमेंट का

सही उत्तर: (A) चूने और चिरोड़ी का

हल:

अवधारणा:

- ऐतिहासिक स्थापत्य के प्रश्न में निर्माण-सामग्री का वही विशिष्ट युग्म चुनना चाहिए जो पाठ में दिया हो।
- बहुविकल्पीय उत्तर में पाठ के सटीक प्रसंग से मेल खाने वाला विकल्प चुना जाता है।

चरण 1: पाठ के प्रसंग से उत्तर की पहचान पाठ में महाकुंड की दीवारों की मजबूत चिनाई का वर्णन मिलता है। इस चिनाई में चूने और चिरोड़ी के गारे का प्रयोग किया गया था। प्रश्न दीवारों की चिनाई की सामग्री पूछता है, इसलिए इसी जोड़ी की पहचान आवश्यक है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच चूना और रेता (B), रेता और बदरपुर (C), तथा चूना और सीमेंट (D) पाठ में दी गई सामग्री के युग्म नहीं हैं। निर्माण में प्रयुक्त होने वाली कोई सामान्य परिचित सामग्री चुनना पर्याप्त नहीं है; उत्तर महाकुंड के विशिष्ट विवरण पर आधारित होना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष महाकुंड की दीवारों की चिनाई में चूने और चिरोड़ी का प्रयोग हुआ था। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: महाकुंड की चिनाई के लिए 'चूना और चिरोड़ी' का युग्म साथ याद रखें; इसे आधुनिक सीमेंट से न बदलें।

6(x). मुअनजो-दड़ो के खास हिस्से के सिरे पर स्थित स्तूप वाले चबूतरे को कहा जाता है ? [1 अंक]

(A) स्तूप

(B) बौद्ध स्तूप

(C) गढ़

(D) राजधानी

सही उत्तर: (C) गढ़

हल:

अवधारणा:

- स्थापत्य-वर्णन में किसी भाग का नाम और उस पर स्थित इमारत का नाम अलग-अलग पहचाना जाता है।
- बहुविकल्पीय उत्तर में पाठ के सटीक प्रसंग से मेल खाने वाला विकल्प चुना जाता है।

चरण 1: पाठ के प्रसंग से उत्तर की पहचान मुअनजो-दड़ो के खास हिस्से में ऊँचे चबूतरे पर बौद्ध स्तूप स्थित है। स्तूप वाले इस ऊँचे चबूतरे अथवा क्षेत्र को गढ़ कहा जाता है। प्रश्न चबूतरे का नाम पूछता है, उस पर स्थित स्तूप का नहीं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच स्तूप (A) और बौद्ध स्तूप (B) ऊपर स्थित संरचना का नाम हैं, इसलिए वे पूछे गए चबूतरे की पहचान नहीं बताते। राजधानी (D) किसी प्रमुख प्रशासनिक नगर का नामकरण है; यह इस ऊँचे चबूतरे के लिए प्रयुक्त पाठगत नाम नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष स्तूप वाले चबूतरे को गढ़ कहा जाता है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में 'स्तूप' और 'स्तूप वाला चबूतरा' अलग रखें; चबूतरे का नाम पूछे जाने पर गढ़ चुनें।

7(क). किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

कहानी और नाटक में क्या-क्या समानताएँ होती हैं ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी और नाटक दोनों कथात्मक विधाएँ हैं; इनमें किसी घटना अथवा जीवन-स्थिति के माध्यम से मानवीय अनुभव प्रस्तुत किया जाता है।
- कथावस्तु, पात्र, संवाद, परिवेश और संघर्ष दोनों के महत्त्वपूर्ण तत्त्व हैं।

चरण 1: तुलना के आधार पहचानना समानताओं का उत्तर देते समय दोनों विधाओं के साझा तत्त्वों पर ध्यान देना चाहिए। कथानक घटनाओं को जोड़ता है, पात्र उन्हें गति देते हैं और संवाद उनके स्वभाव तथा संबंधों को प्रकट करते हैं। दोनों में घटनाओं का विश्वसनीय क्रम तथा चरित्रों के व्यवहार की संगति आवश्यक होती है।

चरण 2: उत्तर को प्रभावपूर्ण बनाना उदाहरण के लिए किसी पारिवारिक समस्या पर आधारित कथा में रिश्तों का तनाव, पात्रों की प्रतिक्रिया और घटनाओं का विकास दोनों विधाओं में हो सकता है। कथाकार और नाटककार अपने पात्रों को विश्वसनीय बनाते हैं ताकि पाठक या दर्शक उनकी स्थिति से जुड़ सके। यहाँ प्रस्तुति की भिन्नता के बजाय इन्हीं साझा आधारों को लिखना अपेक्षित है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में आदर्श उत्तर कहानी और नाटक दोनों साहित्य की कथात्मक विधाएँ हैं। दोनों में कथावस्तु, पात्र, संवाद, देशकाल और वातावरण का महत्त्व होता है। जीवन की घटनाएँ, मानवीय संवेदनाएँ और सामाजिक स्थितियाँ दोनों की सामग्री बनती हैं। संघर्ष कथानक को गति देता है तथा घटनाओं का क्रम जिज्ञासा जगाता है। दोनों का उद्देश्य प्रभावपूर्ण ढंग से जीवन का चित्रण करना है।

चरण 4: निष्कर्ष कहानी और नाटक में कथात्मकता, पात्र, संवाद, परिवेश तथा संघर्ष की समानता होती है।

त्वरित सुझाव: समानताओं के उत्तर में कथानक, पात्र, संवाद, परिवेश और संघर्ष को क्रम से जोड़कर लिखें।

7(ख). किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

रेडियो नाटक और सिनेमा में क्या भिन्नता होती है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; सिनेमा दृश्य और श्रव्य दोनों माध्यमों का उपयोग करता है।
- माध्यम की प्रकृति के अनुसार संवाद, ध्वनि, अभिनय और दृश्य-संयोजन की भूमिका बदलती है।

चरण 1: माध्यम के अनुसार अंतर स्पष्ट करना रेडियो नाटक में श्रोता पात्रों और घटनाओं को देख नहीं सकता। इसलिए आवाज़ का उतार-चढ़ाव, संवाद, संगीत और ध्वनि-प्रभाव उसे स्थान, परिस्थिति तथा क्रिया का बोध कराते हैं। सिनेमा में कैमरा, दृश्य और अभिनेताओं की देहभाषा भी सूचना देते हैं; दृश्य में दिखाई दे रही बात को हर बार संवाद में बताना आवश्यक नहीं होता।

चरण 2: उत्तर को प्रभावपूर्ण बनाना उदाहरण के लिए वर्षा का वातावरण रेडियो में बरसने की आवाज़ और पात्रों की उपयुक्त बातचीत से स्पष्ट किया जा सकता है। सिनेमा में भीगते रास्ते और गिरती बूँदें सीधे दिखाई जा सकती हैं। इसी प्रकार रेडियो में मौन हावभाव से सूचना नहीं मिलती, जबकि फिल्म में चेहरे का भाव भी पात्र की मन:स्थिति बता सकता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में आदर्श उत्तर रेडियो नाटक केवल श्रव्य माध्यम है, जबकि सिनेमा दृश्य-श्रव्य माध्यम है। रेडियो में पात्र, वातावरण और घटनाएँ संवाद, संगीत तथा ध्वनि-प्रभावों से उभरते हैं; श्रोता उनकी कल्पना करता है। सिनेमा में दृश्य, वेशभूषा, हावभाव, कैमरे और संपादन की भी भूमिका होती है। इसलिए रेडियो नाटक में ध्वनियों और संवादों से आवश्यक क्रियाओं तथा स्थितियों को स्पष्ट करना पड़ता है।

चरण 4: निष्कर्ष रेडियो नाटक का आधार श्रवण और कल्पना है; सिनेमा में ध्वनि के साथ प्रत्यक्ष दृश्य भी अर्थ रचते हैं।

त्वरित सुझाव: पहले श्रव्य और दृश्य-श्रव्य का अंतर लिखें, फिर संवाद तथा ध्वनि-प्रभावों की भूमिका से उसे स्पष्ट करें।

7(ग). किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

क्या नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन की कोई तकनीक हो सकती है ? इन्हें लिखते समय क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अप्रत्याशित विषय पर लेखन में मौलिक सोच, अनुभव, कल्पना और विचारों का तार्किक संगठन आवश्यक होता है।
- निश्चित यांत्रिक सूत्र के स्थान पर विषय को समझना, विचार जुटाना और सुसंगत रूपरेखा बनाना उपयोगी प्रक्रिया है।

चरण 1: लेखन की प्रक्रिया और सावधानियाँ चुनना अपरिचित विषय देखकर तैयार उत्तर खोजने के बजाय उसके विभिन्न पक्षों पर स्वतंत्र रूप से सोचना चाहिए। निजी अनुभव, आसपास के जीवन का निरीक्षण और कल्पना सामग्री देते हैं। प्रारंभिक विचारों में से प्रासंगिक बातें चुनकर उन्हें क्रमबद्ध करना चाहिए। विषय से भटकाव, विचारों की पुनरावृत्ति, घिसी-पिटी अभिव्यक्ति और अनावश्यक विस्तार से रचना का प्रभाव घटता है।

चरण 2: उत्तर को प्रभावपूर्ण बनाना रूपरेखा बनाते समय आरंभ में विषय का आकर्षक परिचय, मध्य में संबंधित अनुभव या विचार और अंत में उपयुक्त निष्कर्ष रखा जा सकता है। लिखने के बाद यह जाँचना उपयोगी है कि प्रत्येक वाक्य विषय को आगे बढ़ाता है और भाषा स्वाभाविक तथा व्याकरणसम्मत है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में आदर्श उत्तर नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन का कोई निश्चित बँधा-बँधाया सूत्र नहीं होता। विषय पर स्वतंत्र चिंतन करके अनुभव, कल्पना और अवलोकन से सामग्री जुटाई जा सकती है। फिर विचारों की रूपरेखा बनाकर उन्हें क्रमबद्ध करें। लिखते समय मौलिकता, विषय से जुड़ाव, स्पष्ट भाषा और तारतम्य बनाए रखें। घिसी-पिटी बातों, दोहराव, अनावश्यक विस्तार तथा विषयांतर से बचें।

चरण 4: निष्कर्ष अप्रत्याशित लेखन में तैयार सूत्र से अधिक स्वतंत्र चिंतन, मौलिकता और विचारों का सुसंगत संगठन उपयोगी है।

त्वरित सुझाव: विषय के मुख्य शब्द से जुड़े अनुभव लिखकर उनमें से प्रासंगिक विचार चुनें और स्पष्ट क्रम बनाएँ।

8(क). दिए गए चार विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए।

त्योहारों पर बाजार की चहल-पहल

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय को अनुभव, दृश्य और संवेदना के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। त्योहार के बाजार का वर्णन करते समय रंग, ध्वनि, सुगंध और लोगों की गतिविधियाँ लेख को सजीव बनाती हैं।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में उपयुक्त शीर्षक, सहज आरंभ, क्रमबद्ध वर्णन और सार्थक अंत होना चाहिए। खरीदारी के साथ त्योहार के सामाजिक भाव को भी स्थान देना चाहिए।

चरण 1: स्वरूप और सामग्री की योजना विषय को शीर्षक बनाएँ। बाजार में प्रवेश के दृश्य से आरंभ करके सजी दुकानों, मिठाइयों, बच्चों और दुकानदारों की गतिविधियों का वर्णन करें। अंत में उल्लास तथा अपनत्व का भाव रखें। भाषा चित्रात्मक और सहज हो; लेख को केवल वस्तुओं की सूची न बनाएँ। वर्णन में पहले बाजार का समग्र वातावरण, फिर किसी व्यक्ति का छोटा प्रसंग और अंत में अपना अनुभव रखें। इससे लेख में दृश्यात्मकता के साथ विचार का स्वाभाविक विकास भी होगा।

चरण 2: पूर्ण आदर्श रचनात्मक लेख **त्योहारों पर बाजार की चहल-पहल**

त्योहार आते ही बाजार जैसे नई पोशाक पहन लेता है। रंगीन झालरों से सजी दुकानें दूर से ही ग्राहकों को बुलाती हैं। मिठाइयों की सुगंध हवा में घुलकर उत्सव का स्वाद जगाती है। कहीं बच्चे खिलौनों के लिए मचलते हैं, तो कहीं बड़े कपड़ों और उपहारों की खरीदारी में व्यस्त हैं। दुकानदारों की पुकार और ग्राहकों की बातचीत से गलियाँ गूँज उठती हैं। दीपक बेचती बूढ़ी अम्मा के चेहरे पर भी बिक्री बढ़ने की आशा चमकती है। भीड़ के बीच चलते हुए मुझे लगता है कि त्योहार केवल सामान खरीदने का अवसर नहीं, लोगों को जोड़ने का माध्यम भी हैं।

हमें स्थानीय कारीगरों से खरीदारी करनी चाहिए और अनावश्यक खर्च से बचना चाहिए। सच्चा उत्सव तभी है, जब उसकी खुशी सबके घर पहुँचे।

चरण 3: निष्कर्ष इस लेख में बाजार का सजीव दृश्य, उत्सवी उल्लास, छोटे विक्रेताओं की आशा और सबके साथ खुशियाँ बाँटने का संदेश एक क्रम में प्रस्तुत हैं।

त्वरित सुझाव: बाजार का वर्णन करते समय एक दृश्य, एक ध्वनि और एक सुगंध जोड़ें तथा अंत में त्योहार से जुड़ा मानवीय भाव रखें।

8(ख). दिए गए चार विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए।

अंतर्राष्ट्रीय जगत में भारत का बढ़ता कद [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख किसी विषय पर विचारों को रोचक, क्रमबद्ध और प्रभावपूर्ण भाषा में प्रस्तुत करता है। अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा का विवेचन करते समय उपलब्धियों के साथ उनके मानवीय और सांस्कृतिक आधार भी स्पष्ट करने चाहिए।
- लगभग 120 शब्दों का लेख उपयुक्त शीर्षक, विषय के परिचय, उदाहरणों और सार्थक निष्कर्ष से बनता है। दावों को संतुलित रखें और ऐसे अनावश्यक आँकड़े न दें जिनकी पुष्टि उपलब्ध नहीं है।

चरण 1: स्वरूप और विचारों का क्रम शीर्षक के बाद विश्व में भारत की पहचान का उल्लेख करें। विज्ञान, अर्थव्यवस्था, संस्कृति और सहयोग के उदाहरणों से विषय विकसित करें। अंत में यह भाव रखें कि प्रतिष्ठा के साथ जिम्मेदारी भी बढ़ती है। लेख को समाचारों की सूची बनाने के बजाय विचारों का प्रवाह बनाए रखें। प्रत्येक उदाहरण को भारत के बढ़ते प्रभाव से जोड़ें। मानवीय सहयोग और विश्वशांति को अंत में रखने से विषय को व्यापक अर्थ मिलता है।

चरण 2: पूर्ण आदर्श रचनात्मक लेख **अंतर्राष्ट्रीय जगत में भारत का बढ़ता कद**

विश्व के मंच पर भारत की आवाज अब अधिक विश्वास के साथ सुनी जाती है। विज्ञान, तकनीक, अर्थव्यवस्था और संस्कृति के क्षेत्रों में उसकी उपलब्धियाँ नई पहचान बना रही हैं। भारतीय वैज्ञानिकों के अंतरिक्ष अभियान युवाओं को बड़े सपने देखने की प्रेरणा देते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी में भारतीय प्रतिभा ने अनेक देशों में अपनी क्षमता सिद्ध की है। योग और भारतीय संस्कृति लोगों को स्वास्थ्य तथा सहअस्तित्व का संदेश देते हैं। संकट के समय अन्य देशों की सहायता करना हमारी मानवीय दृष्टि का परिचायक है। भारत संवाद और सहयोग के माध्यम से विश्वशांति का समर्थन करता है। बढ़ती प्रतिष्ठा के साथ हमारी जिम्मेदारी भी बढ़ती है। शिक्षा, समानता और पर्यावरण की रक्षा पर ध्यान देकर ही हम इस सम्मान को स्थायी बना सकते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष लेख भारत की बढ़ती वैश्विक पहचान को वैज्ञानिक उपलब्धियों, सांस्कृतिक प्रभाव और सहयोग की भावना से जोड़ता है तथा प्रतिष्ठा बनाए रखने की जिम्मेदारी स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: इस विषय में विज्ञान, संस्कृति और सहयोग के तीन उदाहरण चुनें; अंतिम वाक्य में बढ़ती प्रतिष्ठा के साथ जुड़ी जिम्मेदारी बताएँ।

8(ग). दिए गए चार विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए।

पकी फसल से लहलहाता खेत [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दृश्यात्मक रचनात्मक लेख में रंग, गंध, ध्वनि और गति के सहारे पाठक के सामने अनुभव का चित्र उपस्थित किया जाता है।
- इस विषय में पकी फसल का सौंदर्य, किसान का परिश्रम और अन्न के प्रति सम्मान एक भावपूर्ण क्रम में जुड़ने चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और दृष्टिकोण निश्चित कीजिए विषय के अनुरूप शीर्षक देकर लगभग 120 शब्दों में एक सुसंगठित लेख लिखना है।

आरंभ खेत के प्रत्यक्ष दृश्य से करें। बीच में हवा, बालियों और किसान की गतिविधियों का वर्णन आए। अंत में दृश्य से उपजी अनुभूति व्यक्त करें। रचनात्मक लेख होने के कारण पत्र जैसे पते अथवा संबोधन की आवश्यकता नहीं है।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना बनाइए सुनहरी बालियाँ और मिट्टी की सुगंध दृश्य को जीवंत बनाएँगी। किसान के चेहरे की प्रसन्नता उसके लंबे परिश्रम का फल प्रकट करेगी। वर्णन में एक ही दृश्य को दोहराने के स्थान पर खेत से किसान और किसान से अन्न के महत्त्व तक सहज क्रम रखें। भाषा सरल और संवेदनापूर्ण हो; अनावश्यक आँकड़े देकर दृश्य का प्रभाव कम न करें।

चरण 3: पूर्ण नमूना लेख **पकी फसल से लहलहाता खेत**

सुबह की सुनहरी धूप में गेहूँ का खेत किसी विशाल स्वर्णिम चादर जैसा लग रहा था। हवा चलती तो पकी बालियाँ एक साथ झुककर मानो धरती को प्रणाम करतीं। उनके बीच उठती सरसराहट मधुर संगीत बनकर कानों में घुल रही थी। मेड़ पर खड़ा किसान मुसकरा रहा था। महीनों का श्रम आज उसकी आँखों में संतोष की चमक बन गया था। मिट्टी की सोंधी गंध और दूर चहकते पक्षियों ने वातावरण को उत्सव बना दिया। थोड़ी ही देर में कटाई शुरू होने वाली थी। ये बालियाँ केवल अनाज नहीं, असंख्य परिवारों की रोटी और किसान की आशाएँ थीं। मैंने झुककर एक बाली छुई और मन ही मन उस अन्नदाता को प्रणाम किया, जिसका पसीना हमारे जीवन को पोषण देता है।

चरण 4: निष्कर्ष इस लेख में खेत का सजीव चित्रण, किसान के श्रम का सम्मान और अन्न के प्रति कृतज्ञता एक सूत्र में जुड़े हैं।

त्वरित सुझाव: दृश्य वर्णन में केवल सुंदर कहने के बजाय रंग, ध्वनि और गति के ठोस बिंब लिखें तथा अंत को उसी दृश्य से जोड़ें।

8(घ). दिए गए चार विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए।

नदी में अचानक पानी का बढ़ना [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- घटना पर आधारित रचनात्मक लेख में दृश्य, बदलती परिस्थिति और मानवीय प्रतिक्रिया का क्रमबद्ध चित्रण किया जाता है।
- नदी का अचानक बढ़ता जल कथानक का केंद्र है। सामान्य वातावरण से संकट और फिर सहायता की ओर बढ़ता वर्णन लेख को प्रभावी बनाता है।

चरण 1: प्रारूप और कथन शैली चुनिए उपयुक्त शीर्षक के बाद लगभग 120 शब्दों का लेख लिखें। प्रत्यक्ष अनुभव की शैली में घटना का वर्णन किया जा सकता है। पहले नदी का शांत रूप दिखाएँ, फिर पानी बढ़ने से उत्पन्न परिवर्तन और लोगों की प्रतिक्रिया लिखें। अंत में घटना से मिली सीख रखें। लेख में पत्र की तरह पता अथवा संबोधन नहीं आएगा।

चरण 2: घटना का क्रम तय कीजिए जल का मटमैला रंग, बढ़ती लहरें और डूबती सीढ़ियाँ संकट को दृश्य रूप देंगी। लोगों को ऊँचे स्थान पर पहुँचाने की घटना मानवीय सहयोग को उभारेगी। वर्णन में अतिशयोक्ति या अनावश्यक विनाश जोड़ने से बचें। हर वाक्य घटना को आगे बढ़ाए और समापन उसके अनुभव से स्वाभाविक रूप से निकले।

चरण 3: पूर्ण नमूना लेख **नदी का बदला रूप**

शाम को हम नदी किनारे टहल रहे थे। शांत जल पर डूबते सूरज की किरणें चमक रही थीं। तभी धारा तेज होने लगी और मटमैला पानी सीढ़ियाँ ढकने लगा। पहाड़ों पर हुई भारी वर्षा का पानी अचानक यहाँ पहुँच गया था। देखते ही देखते किनारे की झाड़ियाँ लहरों में गायब हो गईं। लोगों की घबराई आवाजें वातावरण में गूँजने लगीं। कुछ युवकों ने बच्चों और बुजुर्गों को सँभालकर ऊँचे रास्ते तक पहुँचाया। हमने भी एक वृद्ध की सहायता की। थोड़ी देर पहले सुंदर दिखती नदी अब अपनी विराट शक्ति का परिचय दे रही थी। सुरक्षित स्थान पर पहुँचकर मैंने राहत की साँस ली। उस शाम समझ आया कि प्रकृति का सम्मान और संकट में परस्पर सहयोग कितना आवश्यक है।

चरण 4: निष्कर्ष नमूना लेख में नदी के बदलते दृश्य, संकट में सामूहिक सहायता और प्रकृति के प्रति सजगता को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया गया है।

त्वरित सुझाव: अचानक घटने वाली घटना लिखते समय पहले का दृश्य, परिवर्तन का संकेत और लोगों की प्रतिक्रिया इसी क्रम में रखिए।

9(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

मुद्रित माध्यमों के लिए लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुद्रित माध्यम में पाठक अपनी सुविधा और गति से पढ़ सकता है तथा कठिन अंश को दोबारा देख सकता है। इसलिए लेखन का आधार स्पष्ट भाषा और सुव्यवस्थित सूचना है।
- समाचारपत्र और पत्रिका में स्थान सीमित होता है। तथ्यपरकता, संक्षिप्तता और पाठक की रुचि का संतुलन आवश्यक है।

चरण 1: भाषा और प्रस्तुति की आवश्यकताएँ समझिए मुद्रित लेखन में लेखक पाठक से तत्काल संवाद करके शंका दूर नहीं कर सकता। अतः वाक्य अपने आप में स्पष्ट हों, कठिन शब्दों का अनावश्यक प्रयोग न हो और विचार क्रम से आएँ। शीर्षक विषय का संकेत दे तथा अनुच्छेद छोटे हों। लेखन ऐसा हो कि भिन्न शैक्षिक पृष्ठभूमि वाले पाठक भी आशय समझ सकें। लेख छपने के बाद उसके कथन स्थायी रूप में उपलब्ध रहते हैं, इसलिए प्रकाशन से पहले नाम, तिथि और आँकड़ों की जाँच विशेष रूप से आवश्यक है। आकर्षक शैली के लिए अतिशयोक्ति करके सूचना का अर्थ बदलना अनुचित है। ये बातें नीचे दिए संक्षिप्त उत्तर में समाहित हैं।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में उत्तर मुद्रित माध्यमों के लिए लिखते समय पाठक की रुचि, समझ और आवश्यकताओं का ध्यान रखना चाहिए। भाषा सरल, सहज, स्पष्ट तथा प्रचलित शब्दों वाली हो। छोटे वाक्यों और अनुच्छेदों में विचार क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किए जाएँ। तथ्य, नाम, आँकड़े और वर्तनी सही हों। सीमित स्थान के कारण अनावश्यक विस्तार और पुनरावृत्ति से बचना चाहिए। शीर्षक आकर्षक एवं विषयानुकूल हो। कठिन शब्दों और संदर्भों का अर्थ स्पष्ट किया जाए। लेखन रोचक हो, किंतु तथ्यों की विश्वसनीयता और निष्पक्षता बनी रहे।

चरण 3: निष्कर्ष मुद्रित माध्यमों का प्रभावी लेखन पाठक-केंद्रित, स्पष्ट, संक्षिप्त, क्रमबद्ध और तथ्यात्मक रूप से विश्वसनीय होता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर लिखते समय पाठक, भाषा, तथ्य, क्रम और सीमित स्थान की पाँच कसौटियों पर अपने बिंदु जाँचें।

9(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

फीचर लेखन और समाचार लेखन की शैलियों पर विचार व्यक्त कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार का लक्ष्य किसी ताजा घटना के सत्यापित तथ्यों को शीघ्र और स्पष्ट रूप में पहुँचाना है। फीचर विषय के मानवीय पक्ष और अनुभव को रोचक विस्तार देता है।
- समाचार सामान्यतः उलटा पिरामिड शैली अपनाता है; फीचर में कथा, वर्णन और संवाद जैसी शैलियों का लचीलापन रहता है। दोनों में तथ्य सही होने चाहिए।

चरण 1: उद्देश्य से शैली का संबंध स्पष्ट कीजिए समाचार में सबसे महत्त्वपूर्ण जानकारी पहले आती है, ताकि पाठक आरंभ में ही घटना का सार जान ले। आगे विवरण घटते महत्त्व के क्रम में दिए जाते हैं। फीचर में शुरुआत किसी दृश्य, प्रसंग या व्यक्ति से हो सकती है और विषय धीरे-धीरे खुल सकता है। यहाँ लेखक की संवेदना और प्रस्तुति की मौलिकता के लिए अधिक अवसर है। फिर भी रोचकता के लिए तथ्य गढ़ना उचित नहीं है। शैली की स्वतंत्रता का अर्थ तथ्यात्मक स्वतंत्रता नहीं है। समाचार का आरंभ सूचना का सार देता है, जबकि फीचर का आरंभ पाठक की उत्सुकता जगाकर उसे विषय के भीतर ले जाता है।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में उत्तर समाचार लेखन की शैली तथ्यपरक, संक्षिप्त और वस्तुनिष्ठ होती है। सामान्यतः उलटा पिरामिड शैली में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सूचना पहले तथा शेष विवरण घटते महत्त्व के क्रम में आते हैं। फीचर लेखन की शैली रोचक, वर्णनात्मक और कथात्मक होती है। इसमें मानवीय संवेदनाओं, वातावरण और अनुभवों को उभारा जाता है। इसका आरंभ किसी दृश्य, संवाद या प्रसंग से हो सकता है। फीचर पर उलटा पिरामिड शैली का बंधन नहीं होता। दोनों में भाषा स्पष्ट और तथ्य विश्वसनीय हों, किंतु फीचर में रचनात्मक प्रस्तुति की अधिक गुंजाइश होती है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार में सूचना का महत्त्व शैली का क्रम निर्धारित करता है; फीचर में विषय की रोचक और संवेदनापूर्ण प्रस्तुति को अधिक स्थान मिलता है।

त्वरित सुझाव: तुलना में समाचार के लिए तथ्य और उलटा पिरामिड, तथा फीचर के लिए मानवीय पक्ष और कथात्मक स्वतंत्रता अवश्य लिखें।

9(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

संपादकीय लेख कौन लिखता है ? समाचार पत्र-पत्रिकाओं में इसका क्या महत्त्व है ? इस लेखन के साथ किसी का नाम क्यों नहीं लिखा होता ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादकीय किसी महत्त्वपूर्ण समसामयिक विषय पर समाचारपत्र की संस्थागत राय प्रस्तुत करता है। इसकी पहचान विषय के विश्लेषण और तर्कपूर्ण दृष्टिकोण से होती है।
- संपादकीय के लेखक और उसके अंतर्गत व्यक्त मत के प्रतिनिधित्व में अंतर समझना आवश्यक है। व्यक्ति उसे लिखता है, पर विचार पूरे समाचारपत्र के माने जाते हैं।

चरण 1: तीनों प्रश्नों के अनुरूप उत्तर की योजना पहले बताइए कि संपादकीय संपादक अथवा संपादकीय मंडल का सदस्य लिखता है। फिर इसका महत्त्व स्पष्ट कीजिए : यह घटनाओं का विवेचन करता है, पत्र की नीति और दृष्टि सामने लाता है तथा पाठकों को विचार बनाने में सहायता देता है। अंत में नाम न छपने का कारण दीजिए। इसे किसी एक व्यक्ति का निजी विचार मानना अनुचित होगा, क्योंकि यह पत्र की सामूहिक वैचारिक स्थिति का प्रतिनिधि होता है। समाचार केवल घटना की सूचना देता है; संपादकीय उसके निहितार्थ और प्रभाव पर विचार करता है।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर संपादकीय लेख सामान्यतः समाचारपत्र का संपादक अथवा संपादकीय मंडल का सदस्य लिखता है। इसमें किसी महत्त्वपूर्ण समसामयिक विषय का विश्लेषण करते हुए पत्र का दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जाता है। यह घटनाओं का अर्थ समझने, जनमत निर्माण करने तथा पाठकों में विवेकपूर्ण चिंतन विकसित करने में सहायक है। इससे समाचारपत्र की नीति और वैचारिक पहचान स्पष्ट होती है। इसके साथ लेखक का नाम इसलिए नहीं दिया जाता क्योंकि इसमें व्यक्त विचार किसी व्यक्ति की निजी राय नहीं, बल्कि संपूर्ण समाचारपत्र की संस्थागत राय होते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष संपादकीय का महत्त्व तर्कपूर्ण विश्लेषण और समाचारपत्र की संस्थागत राय में है; इसी प्रतिनिधिक स्वरूप के कारण उसके साथ व्यक्तिगत नाम नहीं छपता।

त्वरित सुझाव: उत्तर को तीन सूत्रों में बाँटें : लेखक, जनमत निर्माण में भूमिका और समाचारपत्र की सामूहिक राय के कारण नाम का अभाव।

10(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

तुलसीदास ने अपने युग की जिस दुर्दशा का वर्णन किया है, आज के संदर्भ में उस पर टिप्पणी कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास की 'कवितावली' में जीविका का संकट और भूख से पीड़ित जनजीवन उभरता है। किसान, व्यापारी, भिखारी और सेवक, सभी के आजीविका के साधन बाधित हैं।
- समकालीन टिप्पणी में कविता के संकट की आज की परिस्थितियों से तुलना करनी चाहिए और ऐतिहासिक स्थितियों को पूरी तरह एक जैसा नहीं बताना चाहिए।

चरण 1: कविता के आधार पर तुलना का केंद्र पहचानिए 'खेती न किसान को' और 'जीविका बिहीन लोग' जैसे शब्द उस युग में रोज़गार

और निर्वाह के व्यापक संकट को व्यक्त करते हैं। आज के संदर्भ में किसान की कठिनाइयों, बेरोज़गारी और आर्थिक विषमता को इस पीड़ा से जोड़ना उचित है। साथ ही आधुनिक सुविधाओं तथा सहायता की व्यवस्थाओं के विकास को स्वीकार करना चाहिए। कविता की प्रासंगिकता भूख और अभाव की मानवीय समस्या में है, दोनों युगों की प्रत्येक परिस्थिति में समानता होने में नहीं।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में आदर्श उत्तर तुलसीदास ने अपने युग में किसानों, व्यापारियों और श्रमिकों की आजीविका के संकट तथा भूख का मार्मिक चित्रण किया है। आज भी बेरोज़गारी, गरीबी, आर्थिक विषमता और किसानों की कठिनाइयाँ विद्यमान हैं। यद्यपि सुविधाएँ और सहायता की व्यवस्थाएँ बढ़ी हैं, फिर भी अनेक लोग सम्मानजनक जीवन से वंचित हैं। इसलिए उनकी कविता आज भी संवेदनशील और न्यायपूर्ण व्यवस्था की आवश्यकता याद दिलाती है।

चरण 3: निष्कर्ष जीविका, भूख और असमानता की समस्याएँ शेष रहने के कारण तुलसीदास का वर्णन आज भी प्रासंगिक है।

त्वरित सुझाव: पहले कविता का जीविका-संकट बताइए, फिर आज के दो उदाहरण देकर मानवीय पीड़ा की निरंतरता स्पष्ट कीजिए।

10(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंशराय बच्चन की 'एक गीत' में ढलते दिन की पृष्ठभूमि में प्रियजनों से मिलने की उत्कंठा और अकेलेपन की व्यथा व्यक्त हुई है।
- पक्षियों की गति और कवि की मन:स्थिति का अंतर समझने से कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट होता है : किसी की प्रतीक्षा जीवन को उत्साह और गति देती है।

चरण 1: पक्षियों और कवि की मन:स्थिति जोड़िए घोंसलों में बच्चे अपने माता-पिता की प्रतीक्षा करते हैं, इसलिए पक्षियों के पंखों में चंचलता भर जाती है। कवि के सामने प्रश्न उठता है कि उसकी प्रतीक्षा कौन कर रहा है। यह विचार उसके उत्साह को शिथिल करता है और अकेलेपन की अनुभूति बढ़ाता है। बार-बार दिन ढलने का उल्लेख समय के निरंतर बीतने का बोध कराता है। उत्तर में केवल प्रकृति का वर्णन न करके इस दृश्य से उभरते प्रेम, अपनत्व और जीवन की गति के संबंध को स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में आदर्श उत्तर 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता प्रेम और अपनत्व की प्रेरक शक्ति व्यक्त करती है। घोंसलों में प्रतीक्षारत बच्चों का स्मरण पक्षियों की उड़ान तेज़ कर देता है। इसके विपरीत, कवि को अपनी प्रतीक्षा करने वाले प्रियजन का अभाव व्याकुल और शिथिल करता है। ढलता दिन समय की तीव्र गति का बोध कराता है। कविता बताती है कि प्रियजनों से जुड़ाव जीवन में उत्साह भरता है।

चरण 3: निष्कर्ष कविता का केंद्रीय भाव समय के बीतने के बीच मिलन की उत्कंठा और प्रियजन के अभाव से उपजा अकेलापन है।

त्वरित सुझाव: पक्षियों को बच्चों की प्रतीक्षा गति देती है, जबकि कवि को प्रतीक्षा करने वाले का अभाव शिथिल करता है; इसी अंतर से प्रतिपाद्य लिखें।

10(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता का संदेश लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता मीडिया की संवेदनहीनता और दुख के व्यावसायिक प्रदर्शन पर व्यंग्य करती है।
- मानवीय करुणा का अर्थ पीड़ित व्यक्ति की गरिमा बनाए रखना है; उसे मनोरंजन की वस्तु बनाना करुणा नहीं है।

चरण 1: प्रसंग और व्यंग्य पहचानें कार्यक्रम संचालक अपाहिज व्यक्ति से ऐसे प्रश्न पूछता है जो उसे उसके दुख का बार-बार अनुभव

कराएँ। वह उसकी पीड़ा समझने और सहायता करने के स्थान पर दर्शकों के सामने भावुक दृश्य पैदा करना चाहता है। रोने की अपेक्षा और कैमरे का आग्रह उसके कथित सामाजिक उद्देश्य की असलियत खोल देते हैं।

चरण 2: संदेश का आधार समझें कविता में संचालक की भाषा और व्यवहार का अंतर महत्त्वपूर्ण है। सामाजिक कार्यक्रम का दावा करने वाला माध्यम व्यक्ति की असहायता को अपनी सफलता का साधन बनाता है। कवि पाठक को इस बनावटी सहानुभूति के पीछे छिपे अमानवीय व्यवहार के प्रति सचेत करता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कविता का संदेश है कि किसी असहाय व्यक्ति की पीड़ा को मनोरंजन और प्रचार का साधन नहीं बनाना चाहिए। कवि दुख के प्रदर्शन द्वारा दर्शकों को भावुक करने वाली मीडिया की संवेदनहीन प्रवृत्ति पर व्यंग्य करता है। सच्ची करुणा पीड़ित की गरिमा का सम्मान करने और उसका दुख दूर करने में है, उससे जबरन आँसू निकलवाने में नहीं।

चरण 4: निष्कर्ष कविता पीड़ित की गरिमा का सम्मान और मीडिया से वास्तविक मानवीय संवेदनशीलता की अपेक्षा करती है।

त्वरित सुझाव: संचालक के सामाजिक उद्देश्य के दावे को उसके आँसू निकलवाने वाले व्यवहार से जोड़कर संदेश लिखिए।

11(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
'बगुलों के पंख' कविता के आधार उस सौन्दर्य का वर्णन कीजिए जिसने कवि के मन को मोह लिया। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उमाशंकर जोशी की कविता में प्राकृतिक रंगों का विरोध सौंदर्य को तीव्र बनाता है।
- काले बादलों के बीच उड़ते श्वेत बगुलों की पंक्ति कवि को आकर्षित करती है।

चरण 1: दृश्य की पहचान कवि का मन आकाश में छाए काले बादलों के बीच उड़ते हुए सफेद बगुलों की पंक्ति पर ठहर गया है। यहाँ वर्णित आकर्षण किसी अकेले पक्षी का नहीं, उनके उड़ान-क्रम और बादलों की पृष्ठभूमि से बने पूरे दृश्य का है। यह दृश्य रंग और गति दोनों से मनोहारी बनता है। बादलों का अँधेरा सफेदी को अधिक उज्ज्वल कर देता है और पंखों का सामूहिक फैलाव दृश्य की लय बढ़ाता है। इसी कारण कवि अपनी दृष्टि उससे हटाना नहीं चाहता।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर आकाश में छाए काले बादलों के बीच पंक्तिबद्ध उड़ते बगुलों के उजले पंखों का सौंदर्य कवि के मन को मोह लेता है। श्वेत पंखों की चमक और उनकी सुंदर उड़ान आँखों को बाँध लेती है; कवि उस दृश्य में डूबा रहना चाहता है।

चरण 3: निष्कर्ष काले बादलों की पृष्ठभूमि में उड़ते श्वेत बगुलों की पंक्ति का मोहक सौंदर्य कवि को बाँध लेता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में काले बादल, श्वेत पंख और कवि की बँधी दृष्टि—इन तीन बातों को जोड़िए।

11(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
'बादल राग' कविता में कवि बादल को किस रूप में बुलाता है, और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला की कविता में बादल क्रांति और जनकल्याण का प्रतीक है।
- बादल का गर्जन शोषक वर्ग को भयभीत करता है और वर्षा किसान को जीवन देती है।

चरण 1: प्रतीक का अर्थ कवि बादल को विप्लव के वीर के रूप में बुलाता है। उसका गर्जन जड़ और अन्यायपूर्ण व्यवस्था को चुनौती देता है। इसलिए कविता में बादल केवल प्राकृतिक दृश्य नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की शक्ति का प्रतीक है। यह संबोधन कवि की पक्षधरता भी बताता है। वह पीड़ित जन के जीवन में परिवर्तन चाहता है। किसान के लिए बादल का आना फसल और जीविका की

संभावना है; इसलिए वह उसका स्वागत करता है, जबकि संपन्न शोषक परिवर्तन से डरते हैं।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर कवि बादल को विप्लव के वीर के रूप में बुलाता है, क्योंकि वह शोषण और अत्याचार का अंत करने वाली क्रांति का प्रतीक है। उसकी गर्जना से धनिक भयभीत होते हैं, जबकि उसकी वर्षा शोषित किसान को जीवन, आशा और उल्लास देती है।

चरण 3: निष्कर्ष बादल क्रांति का वीर है, जो शोषितों में नई आशा जगाता और शोषकों को भयभीत करता है।

त्वरित सुझाव: बादल के दो प्रभाव साथ लिखिए: धनिकों का भय और किसान की जीवनदायिनी आशा।

11(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
तुलसीदास ने दरिद्रता की तुलना किससे की है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास दरिद्रता के विनाशकारी प्रभाव को रावण के रूपक द्वारा व्यक्त करते हैं।
- भूख और आजीविका का संकट मनुष्य तथा समाज के जीवन को असह्य बना देता है।

चरण 1: तुलना और उसका आधार कवि दरिद्रता की तुलना दस सिर वाले रावण से करता है। रावण के आतंक की तरह गरीबी का अत्याचार भी व्यापक और विनाशकारी है। जीविका के अभाव में लोग असहाय होकर त्राहि-त्राहि करते हैं; यह केवल धन की कमी का सामान्य उल्लेख नहीं है। इस रूपक में कवि जनता की करुण दशा सामने रखता है। खेती, व्यापार और अन्य जीविकाओं का संकट जनसामान्य को निरुपाय बना देता है। दरिद्रता का प्रभाव किसी एक व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर तुलसीदास ने दरिद्रता की तुलना दशानन रावण से की है। जैसे रावण ने संसार को आतंकित किया था, वैसे ही गरीबी ने लोगों को दुख और अभाव से पीड़ित किया है। आजीविका से वंचित लोग उसके अत्याचार से व्याकुल होकर त्राहि-त्राहि कर रहे हैं।

चरण 3: निष्कर्ष दरिद्रता रूपी रावण का रूपक गरीबी की व्यापक, असह्य और विनाशकारी शक्ति व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: तुलना लिखते समय रावण का नाम देकर रुकें नहीं; आतंक और अभाव की समानता स्पष्ट कीजिए।

12(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
भक्तिन की तुलना हनुमान जी से करने के कारणों को स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महादेवी वर्मा का संस्मरण भक्तिन की निष्ठा, सेवाभाव और आत्मीयता को उभारता है।
- हनुमान से तुलना का आधार अपने आराध्य के प्रति अटूट समर्पण है, बाहरी रूप या शारीरिक शक्ति नहीं।

चरण 1: तुलना का मुख्य आधार हनुमान अपने आराध्य राम के प्रति अटूट निष्ठा रखते हैं। इसी प्रकार भक्तिन लेखिका से गहरा आत्मीय संबंध रखती है और उनकी सेवा को अपने जीवन का महत्त्वपूर्ण काम समझती है। वह केवल वेतन पाने के लिए काम करने वाली सेविका की सीमाओं में नहीं बँधती। इस व्यवहार में स्वामिभक्ति के साथ स्नेह भी है; दोनों को अलग नहीं किया जा सकता।

चरण 2: पाठ के प्रसंग से पुष्टि लेखिका के जेल जाने की संभावना पर भक्तिन भी साथ जाने को तैयार रहती है और वहाँ उनके भोजन तथा देखभाल की चिंता करती है। कठिनाई में भी साथ न छोड़ने की यह तत्परता उसके निस्स्वार्थ समर्पण को प्रकट करती है। वह अपनी सुविधा से अधिक लेखिका के सुख और सुरक्षा को महत्त्व देती है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर भक्तिन की तुलना हनुमान जी से उसकी अटूट निष्ठा, सेवाभाव और समर्पण के कारण की गई है। जैसे हनुमान राम की सेवा को सर्वोपरि मानते हैं, वैसे ही भक्तिन लेखिका के सुख-दुख में साथ रहती है। वह लेखिका के जेल जाने पर उनके साथ जाने और सेवा करने को भी तैयार है। उसका संबंध साधारण सेविका से बढ़कर आत्मीय है।

चरण 4: निष्कर्ष हनुमान जैसी अनन्य निष्ठा और संकट में भी सेवा की तत्परता भक्तिन को इस तुलना का पात्र बनाती है।

त्वरित सुझाव: तुलना का आधार समर्पण बताकर जेल में भी साथ देने की तत्परता का प्रसंग जोड़िए।

12(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

"काले मेघा पानी दे" पाठ में मेढक मंडली पर लोगों द्वारा सहेजे गए पानी को फेंकने को पानी की निर्मम बरबादी क्यों कहा गया है ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सूखा पड़ने पर जल की प्रत्येक बूँद जीवन और घरेलू आवश्यकताओं के लिए मूल्यवान हो जाती है।
- लेखक का विरोध आस्था से अधिक उस व्यवहार से है जिसमें कठिनाई से बचाया हुआ उपयोगी पानी बहा दिया जाता है।

चरण 1: परिस्थिति और लेखक का तर्क समझें वर्षा न होने से पानी का अभाव था। लोग आवश्यक कामों के लिए किसी प्रकार पानी जुटाकर सहेजते थे। ऐसी दशा में उस पानी का उपयोग पीने और अन्य अनिवार्य जरूरतों के लिए होना चाहिए था। मेंढक मंडली पर पानी उँडेलने से वह इन कामों के योग्य नहीं रहता। इस प्रश्न में लेखक के दृष्टिकोण का कारण पूछा गया है। इसलिए जीजी का यह तर्क कि त्याग से वर्षा के देवता प्रसन्न होते हैं, लेखक का अपना विश्वास नहीं माना जा सकता। लेखक के लिए प्रत्यक्ष तथ्य यह था कि उपलब्ध पानी कम हो रहा था, जबकि वर्षा कराने का कोई निश्चित परिणाम सामने नहीं था। इसी असंगति से उसकी आपत्ति तीखी बनती है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर सूखे के दिनों में लोग बड़ी कठिनाई से पानी जुटाकर सहेजते थे। ऐसे बहुमूल्य पानी को मेंढक मंडली पर उँडेल देने से वह व्यर्थ बह जाता था। लेखक को इस क्रिया से वर्षा होने का कोई तर्कसंगत संबंध दिखाई नहीं देता था। इसलिए अकाल और जलाभाव में आवश्यक कामों के लिए बचाए गए पानी को इस तरह फेंकना उसे निर्मम बरबादी लगता था।

चरण 3: निष्कर्ष जलाभाव में कठिनाई से सहेजा पानी बिना उपयोग बहा देना लेखक की दृष्टि में निर्मम बरबादी थी।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सूखा, कठिनाई से संचित जल और लेखक की तर्कशील दृष्टि को जोड़ें; जीजी के विश्वास को लेखक का मत न लिखें।

12(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

"शिरीष पुष्प केवल भौंरों के पदों का कोमल दबाव सहन कर सकता है, पक्षियों का बिलकुल नहीं" – कथन का भाव 'शिरीष के फूल' पाठ के आधार पर कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुष्प की कोमलता का बोध भौंरे और पक्षी के भार की तुलना से कराया गया है।
- शिरीष के फूल की कोमलता और उसके फल की कठोरता अलग विशेषताएँ हैं; यहाँ फूल पर ध्यान देना है।

चरण 1: तुलना का आशय स्पष्ट करें भौंरे का भार और उसके पैरों का दबाव बहुत हल्का होता है। पक्षी का भार उससे अधिक होता है। शिरीष के अत्यंत नाजुक फूल पर हल्का दबाव ही सहनीय है। अत: इस कथन को सामान्य वृक्ष की मजबूती से जोड़ने के बजाय फूल की सुकुमार बनावट से जोड़ना चाहिए। यहाँ कोमलता का अर्थ किसी नैतिक कमजोरी या कायरता से नहीं है। कथन में पुष्प की वास्तविक बनावट का सौंदर्य वर्णित है। लेखक सूक्ष्म स्पर्श की सहनशीलता बताकर पाठक को फूल की नाजुकता अनुभव कराता है। अत: भावार्थ में शिरीष को संकट से हारने वाला कहना अनुचित होगा; उसके वृक्ष की जिजीविषा और पुष्प की सुकुमारता साथ रह सकती हैं।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर इस कथन से शिरीष के फूल की अत्यधिक कोमलता और नाजुक बनावट प्रकट होती है। उसके केसर और फूल इतने सुकुमार होते हैं कि भौंरे के पैरों का हल्का दबाव ही सह सकते हैं। पक्षी का अधिक भार उन्हें क्षति पहुँचा सकता है। भौंरे और पक्षी के दबाव की तुलना द्वारा लेखक ने शिरीष पुष्प की अनूठी सुकुमारता को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन शिरीष पुष्प की असाधारण सुकुमारता व्यक्त करता है; वह भारी दबाव नहीं सह सकता।

त्वरित सुझाव: यहाँ भौंरे के हल्के दबाव और पक्षी के अधिक भार का अंतर समझाएँ; फल की कठोरता को फूल का गुण न बताएँ।

13(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
लुट्टन पहलवान ढोल को ही अपना गुरु क्यों मानता था ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गुरु वह है जो सीख और दिशा दे; लुट्टन को कुश्ती की प्रेरणा ढोल की ताल से मिली।
- उत्तर में चाँद सिंह से मुकाबले के प्रसंग और ढोल के मार्गदर्शन का संबंध स्पष्ट होना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग से कारण पहचानें लुट्टन का कोई विधिवत कुश्ती सिखाने वाला गुरु नहीं था। चाँद सिंह से लड़ते समय उसने ढोल की ताल में दाँव लगाने और प्रतिद्वंद्वी का सामना करने के संकेत सुने। इन संकेतों ने उसका हौसला बढ़ाया और उसे मुकाबले में सफलता मिली। ढोल उसके लिए केवल मनोरंजन का साधन नहीं रहा। उसकी लय उसे संकट में आगे बढ़ने की व्यावहारिक सीख देती थी; इसीलिए उसने अपनी सफलता का श्रेय ढोल को दिया।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर लुट्टन ने किसी गुरु से कुश्ती नहीं सीखी थी। चाँद सिंह से मुकाबले में ढोल की ताल ने उसे दाँव लगाने की प्रेरणा और साहस दिया। उसी के सहारे वह विजयी हुआ। इसलिए वह ढोल को अपना गुरु मानता था।

चरण 3: निष्कर्ष ढोल की ताल ने लुट्टन को कुश्ती में मार्गदर्शन और विजय का साहस दिया, इसलिए ढोल उसका गुरु था।

त्वरित सुझाव: ढोल को गुरु मानने का कारण लिखते समय चाँद सिंह से मुकाबला और ताल से मिले दाँव के संकेत अवश्य जोड़ें।

13(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :
"काले मेघा पानी दे" पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए कि जीजी पर गांधी का प्रभाव था। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गांधी के विचारों में देशप्रेम और समाज के लिए त्याग की भावना का महत्त्व है।
- जीजी की बातों में गांधी का उल्लेख और देश के लिए बलिदान की अपेक्षा उनके प्रभाव का प्रमाण है।

चरण 1: पाठ के प्रमाण को समझें जीजी लेखक को केवल अपने लाभ तक सीमित न रहने की सीख देती हैं। वे गांधी महाराज का हवाला देकर बताती हैं कि देश के लिए त्याग और बलिदान की जरूरत है। इस संदर्भ से उनके विचारों पर गांधी के प्रभाव का प्रत्यक्ष प्रमाण मिलता है। इसलिए उत्तर का आधार जीजी का देशहित और त्याग का विचार है, केवल उनकी धार्मिक मान्यता नहीं।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर जीजी गांधी महाराज का उदाहरण देकर देश के लिए त्याग और बलिदान की प्रेरणा देती थीं। वे चाहती थीं कि व्यक्ति स्वार्थ छोड़कर समाज और देश का हित सोचे। गांधी के विचारों का यह समर्थन उनके ऊपर पड़े गांधी के प्रभाव को सिद्ध करता है।

चरण 3: निष्कर्ष देश के लिए त्याग और बलिदान पर जीजी का आग्रह तथा गांधी का उदाहरण देना उन पर गांधी के प्रभाव का प्रमाण है।

त्वरित सुझाव: जीजी की धार्मिक आस्था मात्र को गांधी का प्रभाव न कहें; देशहित में त्याग और गांधी के उल्लेख को प्रमाण बनाएँ।

13(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

"बाज़ार दर्शन" पाठ में आए 'पर्चेजिंग पावर' से आप क्या समझते हैं ? इसका सकारात्मक उपयोग कैसे किया जा सकता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पर्चेजिंग पावर का अर्थ वस्तुएँ खरीदने की आर्थिक क्षमता या क्रयशक्ति है।
- क्रयशक्ति का सकारात्मक उपयोग वास्तविक जरूरत पूरी करता है और बाजार के आकर्षण से होने वाली फिजूलखर्ची रोकता है।

चरण 1: अर्थ और उपयोग अलग स्पष्ट करें केवल धन होना पर्याप्त नहीं; खरीदते समय अपनी जरूरत का ज्ञान होना चाहिए। खाली मन बाजार की चमक से प्रभावित होकर अनावश्यक वस्तुएँ चुन सकता है। विवेकशील ग्राहक पहले जरूरत तय करता है और धन का उपयोग उसी के अनुसार करता है। इस प्रकार ग्राहक की सजगता धन को उपयोगी खरीद में बदलती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर पर्चेजिंग पावर का अर्थ धन के आधार पर वस्तुएँ खरीदने की क्षमता है। इसका सकारात्मक उपयोग अपनी वास्तविक आवश्यकताओं को पहचानकर उपयोगी वस्तुएँ खरीदने में होता है। बाजार की चकाचौंध में अनावश्यक खरीद से बचना चाहिए और धन का विवेकपूर्ण उपयोग करना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष क्रयशक्ति खरीदने की आर्थिक क्षमता है; आवश्यकता के अनुसार विवेकपूर्ण खरीद इसका सकारात्मक उपयोग है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दो भाग रखें: पहले क्रयशक्ति का अर्थ बताएँ, फिर जरूरत के अनुसार खरीद और अनावश्यक खर्च से बचाव लिखें।